



# सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

श्री 1008 महामंडलेश्वर श्री स्वामी रामानंद दासजी महाराज श्री रामानंद दास अनन्धेश्वर सेवा ट्रस्ट, तपोवन आश्रम

वर्ष-12 अंक: 211 ता. 06 फरवरी 2024, मंगलवार, कार्यालय: 114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूत ( गुजरात ) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

## ईसी ने दी हिदायत, चुनाव प्रचार में अब शामिल नहीं होंगे बच्चे

नई दिल्ली। 2024 के लोकसभा चुनाव को लेकर ईसी ने सख्त हिदायत देते हुए कहा है कि अब बच्चों को चुनाव प्रचार में शामिल नहीं किया जा सकता है। यदि ऐसा हुआ तो सख्त कार्रवाई होगी। बता दें कि भारत निर्वाचन आयोग ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। सोमवार को चुनाव आयोग ने चुनाव प्रचार में बच्चों और नाबालिग को शामिल न करने की हिदायत दी। आयोग ने सख्त निर्देश जारी करते हुए कहा है कि आम चुनाव में प्रचार के पंच बाँटते हुए, पोस्टर चिपकाते हुए, नारे लगाते हुए या पार्टी के झंडे बैनर लेकर चलते हुए बच्चे या नाबालिग नहीं दिखने चाहिए। चुनाव आयोग का कहना है कि चुनाव संबंधी कार्यों या चुनाव अभियान गतिविधियों में बच्चों को शामिल करना बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इस गाइडलाइन में किसी भी तरीके से बच्चों का राजनीतिक अभियान में शामिल करना, जिसमें कविता पाठ करना, गीत, नारे या बच्चों के द्वारा बोले गए शब्द या फिर उनके द्वारा किसी भी राजनीतिक पार्टी या उम्मीदवार के प्रतीक चिह्नों का प्रदर्शन करना बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। चुनाव आयोग ने कहा कि अगर कोई भी बाल बच्चे को शामिल करके प्रचार पाया गया तो बाल श्रम से संबंधित सभी अधिनियम, कानूनों के तहत कार्रवाई की जाएगी। इस संदर्भ में जिला निर्वाचन अधिकारी, रिटनिंग अधिकारी को कार्रवाई करने के जिम्मेदारी दी गई है। हालांकि, किसी राजनीतिक नेता के आसपास अपने माता-पिता या अभिभावक के साथ एक बच्चे की मौजूदगी को चुनाव प्रचार गतिविधि में शामिल नहीं किया गया है और न ही इस गाइडलाइन का उल्लंघन माना जाएगा। अंत में ईसी ने प्रचार कराने पर फ़र्कड़ जाने पर कार्रवाई के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सभी राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को बाल श्रम द्वारा संशोधित बाल श्रम अधिनियम, 1986 का कड़ाई से अनुपालन करने को कहा है।

श्रीनगर। जम्मू और कश्मीर के डोगा जिले के भद्रवाह इलाके में ताजा बर्फबारी से मौसम सुश्रुण हो गया है। यहां बर्फबारी से पहाड़ों की प्राकृतिक सुंदरता बढ़ गई है। बर्फ से लेते पहाड़, पेड़, और बर्फ से सजी नंगी शाखाएँ देश के अलग-अलग हिस्सों से आए पर्यटकों को आकर्षित कर रही थीं। हालांकि जम्मू और कश्मीर में बर्फबारी जनवरी से मार्च महीने के बीच होती है। यहां दूर-दूर से पर्यटक सिर्फ बर्फबारी का मजा लेने के लिए पहुंच रहे हैं। पहाड़ों में लेबे इतजार के बाद अब स्नोफॉल हो रहा है। जिससे पर्यटकों को काफी बढ़ावा मिला है। लेकिन इससे कई सारी मुश्किलें भी पैदा हो रही हैं। वही अटल टनल में 300 पर्यटकों का रैस्वयू भी किया गया। इस समय हड़दो पर भीड़ होने के कारण लंबा जाम लग रहा है और यात्रियों को यहां से आगे जाने के लिए लंबा इंतजार भी करना पड़ रहा है। बताया जा रहा है कि पहाड़ों में लेबे इतजार के बाद अब स्नोफॉल हो रहा है। पिछले माह 2024 के पूरे जनवरी में वहां बर्फ नहीं गिरी और अब वह काफी सफ़ेद, पहाड़, पेड़, हर जगह बर्फ नजर आ रही है। यहां के लोग इस बर्फबारी से बेहद खुश नजर आ रहे हैं। बर्फबारी शुरू होते ही सैलानी पहाड़ी इलाकों का रुख कर लेते हैं। बर्फबारी के दौरान, सैलानी स्कीइंग, स्लेजिंग, और पहाड़ पर ट्रैकिंग जैसी गतिविधियों का आनंद लेते हैं। पहाड़ी इलाकों में मौसम बदल रहा है। बर्फबारी देखने के लिए लोग लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर जा रहे हैं और स्नोफॉल का भी आनंद ले रहे हैं। हिमाचल प्रदेश का सीदवा बर्फ से ढके पहाड़, ग्लेशियर्स, और झीलों से घिरा हुआ होने से और अधिक गढ़ गया है।

## ताजा बर्फबारी ने पहाड़ों पर बिछाई सफेद चादर, सैलानी उठा रहे आनंद

लखनऊ जेल में 36 कैदी एचआईवी पॉजिटिव

लखनऊ। लखनऊ जिला जेल में छैतीस कैदी जांच के बाद एचआईवी से संक्रमित पाए गए हैं, जिससे जेल में वायरल संक्रमण के कुल मामले 47 हो गए हैं। सभी एचआईवी संक्रमित मरीज लखनऊ के एक अस्पताल में इलाज करा रहे हैं। ताजा 36 मामलों से पहले, 11 कैदियों ने पहले एचआईवी के लिए सकारात्मक परीक्षण किया था। यह निदान दिसंबर 2023 में उत्तर प्रदेश स्वास्थ्य विभाग द्वारा किए गए स्वास्थ्य परीक्षणों के हिस्से के रूप में आया। कैदियों के इलाज के तहत जेल प्रशासन ने संक्रमित कैदियों की कोइसलिन शुरू कर दी है। इन मामलों के सामने आने के बाद अधिकारी सतर्क हो गए हैं और संक्रमित लोगों के लिए आहार में बदलाव की अनुमति दी गई है। जेल के एक अधिकारी ने कहा कि संक्रमित कैदियों का आहार बढ़ा दिया गया है। साथ ही पॉजिटिव पाए गए सभी कैदियों को डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया है। इनका केजीएमयू के एंटी रेट्रोवायरल थेरेपी (एआरटी) सेंटर में इलाज चल रहा है। लखनऊ के जेल अधिकारी ने कहा कि राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी के आदेश पर कैदियों की स्वास्थ्य जांच की गई।

## मोदी के बैनर पर कालिख पोतने के आरोप में युका अध्यक्ष कुणाल गिरफ्तार

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बैनर पर कालिख पोतने के आरोप में महाराष्ट्र युवा कांग्रेस अध्यक्ष कुणाल राऊत को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। कुणाल कांग्रेस नेता के साथ ही राज्य के पूर्व कैबिनेट मंत्री नितीन राऊत के बेटे हैं। इस कारण गिरफ्तारी से राजनीति गरमा गई और समर्थकों में थाने पहुंच नारेबाजी की है। गौरतलब है कि कुणाल राऊत पर नागपुर जिला परिषद कार्यालय परिसर में लगे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बैनर को नुकसान पहुंचाने और कालिख पोतने का आरोप है। नागपुर के सहर थाने में इस बात को देखते ही कुणाल मामला दर्ज कराया गया था। रविवार रात नागपुर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए उन्हें गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के खिलाफ समर्थकों ने पुलिस थाने में जमकर नारेबाजी की और पुलिस कार्रवाई पर विरोध जताया है। यहां बतला दें कि विकीरित भारत संकल्प यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी का नागपुर जिला परिषद कार्यालय परिसर में एक बड़ा बैनर लगाया गया था। इस पोस्टर पर कालिख पोतने का आरोप युवा कांग्रेस के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष कुणाल राऊत और उनके सहयोगियों पर लगाया गया था और मामला पुलिस तक पहुंचा है। नागपुर जिला परिषद के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी विष्णुजोरा जाधव ने सदर थाने में शिकायत दर्ज कराते हुए सख्त कार्रवाई की मांग भी की थी। इसी के चलते रविवार रात कुणाल को कुड़ी परिसर से पुलिस ने गिरफ्तार किया है। कुणाल पर पुलिस ने सार्वजनिक संपत्ति क्षति अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई की है।

## तेलंगाना का संक्षिप्त नाम टीएस के बदले टीजी किया गया

- कैबिनेट के फैसले के बाद केंद्र सरकार के राजपत्र में टीजी, टीएस की जगह लेगा

हैदराबाद। तेलंगाना सरकार ने राज्य का संक्षिप्त नाम टीएस की जगह अब टीजी करने का फैसला किया है। यह निर्णय मुख्यमंत्री ए. रेवत रेड्डी की अध्यक्षता में राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में लिया गया। कैबिनेट के फैसले के बाद केंद्र सरकार के राजपत्र में टीजी, टीएस की जगह लेगा। 2014 में तेलंगाना के गठन के बाद तत्कालीन टीआरएस सरकार ने राज्य के संक्षिप्त नाम के रूप में टीएस चुना था। कैबिनेट द्वारा लिए गए निर्णयों के बारे में मीडियाकॉन्फ्रेंस को जानकारी देते हुए मंत्री डी. श्रीधर बाबू ने कहा कि पिछली सरकार ने किसी भी नियम का पालन नहीं किया और अपनी इच्छानुसार टीआरएस से तुकबंदी करते हुए टीएस रखने का फैसला किया। इस निर्णय के बाद वाहन पंजीकरण संख्या में अब उपसर्ग के रूप में टीजी होगा। चुनाव प्रचार के दौरान रेवत रेड्डी द्वारा की गई एक घोषणा को लागू करने के लिए कैबिनेट का निर्णय लिया गया। उन्होंने कहा था कि टीआरएस पार्टी को खुश करने के लिए ही टीजी को टीएस से बदला गया था। कैबिनेट ने तेलंगाना लोगों की भावनाओं को प्रतिबिंबित करने के लिए तेलंगाना तर्क प्रथिमा को बदलने का भी निर्णय लिया। इसने एंड्रेसरी के जय जय हो तेलंगाना को राज्यगीत के रूप में अपनाया का निर्णय लिया। सभी हिताधारकों के परामर्श से एक नया राज्य प्रतीक डिजाइन करने का भी निर्णय लिया गया। कैबिनेट ने 8 फरवरी से राज्य विधानसभा सत्र आयोजित करने का निर्णय लिया। इसमें राज्यपाल के अभिभाषण को मंजूरी दी गई। विधानसभा में चर्चा के बाद दो और गारंटी लागू करने का भी निर्णय लिया गया। ये गारंटी है 500 रुपये में गैस सिलेंडर और घरों को 200 रुपये तक मुफ्त बिजली। कैबिनेट ने राज्य में जाति जगणाना कराने का भी फैसला किया। कोडाल क्षेत्र विकास प्राधिकरण को अधिसूचित करना, 65 सरकारी आईटीआई को उन्नत प्रौद्योगिकी केंद्रों के रूप में अपग्रेड करना, उच्च न्यायालय के निर्माण के लिए 100 एकड़ भूमि का आवंटन और दोषियों को सजा में छूट देने के लिए दिशानिर्देश तैयार करना अन्य प्रमुख निर्णय थे।

## ये लोकतंत्र की हत्या हुई है : सीजेआई चंद्रचूड़

- चंडीगढ़ मेयर चुनाव मामला, वीडियो देखकर कहा कि ये क्या मजाक हो रहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने आज अदालत में वीडियो देखने के दौरान कहा कि क्या ये बैलेट पेपर है?... वीडियो देखकर सीजेआई नाराज हो गए और कहा कि ये लोकतंत्र का मजाक है। लोकतंत्र की हत्या हुई है। दरअसल चंडीगढ़ मेयर चुनाव मामले की सुनवाई के दौरान सोमवार को अभियंता मनु सिंघवी ने बहस की शुरुवात करते हुए सुप्रीम कोर्ट में एक पेन ड्राइव दी। वकील सिंघवी ने हाईकोर्ट के आदेश का जिक्र कर बताया कि कमिश्नर ने रिटनिंग ऑफिसर को नियुक्त किया है। सिंघवी ने कहा कि हम 20 थो बोजेपी 16 थी। वोटिंग में 36 लोग वोट करते हैं। ऑफिसर ने 8 लोगों को अयोग्य करार दिया। ये सभी लोग हमारे थे। इसके बाद अंकड़ 20 घंटेकर 12 हो जाता है। हाईकोर्ट ने बैलेट को सुरक्षित नहीं रखा। बल्कि 3 हफ्ते के लिए नोटिस जारी किया। मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की पीठ के समक्ष एक वीडियो दिखाया गया। यह वीडियो मतदान के समय का था। ये वीडियो उस समय का था जब वोट को अयोग्य ठहराया जा रहा था। सीजेआई ने वीडियो देखने के दौरान कहा कि क्या ये बैलेट पेपर है? नहीं हिस्सा कहा है, जिसमें आप

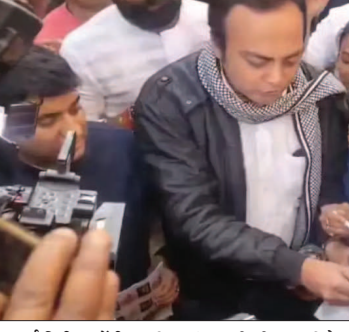


दावा कर रहे हैं कि ऑफिसर बैलेट पेपर ले कर चले गए। वीडियो देखकर सीजेआई नाराज हो गए और कहा कि ये लोकतंत्र का मजाक है। लोकतंत्र की हत्या हुई है। ये क्या रिटनिंग ऑफिसर करता है। हम नहीं चाहते की देश में लोकतंत्र की हत्या हो। सीजेआई ने मामले में नोटिस जारी किया है। उन्होंने कहा है कि चुनाव की पवित्रता बरकरार रखने के लिए चंडीगढ़ मेयर चुनाव को डिटेल पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार के पास जमा होंगी। इतना ही नहीं सीजेआई ने कहा कि रिटनिंग ऑफिसर केमरे की तरफ क्यों देख रहा है? ये कोई भंगोज नहीं है।

## विदेश मंत्री ने मालदीव विवाद पर कहा, दोनों ही देश इन बातों को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताना चाहते

नई दिल्ली। केंद्रीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत-मालदीव विवाद के हालिया रिशतों पर कहा कि हममें से कोई भी इन बातों को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताना चाहता। विदेश मंत्री ने कहा कि मालदीव की एक टीम ने दो दिनों के लिए भारत का दौरा किया। उन्होंने कहा कि हमारे बीच एक समझ है। एक कार्यक्रम में बातचीत के दौरान, विदेश मंत्री जयशंकर ने विभिन्न विदेश नीति के मुद्दों के बारे में बात कर बताया कि वर्तमान में भारत अंतरराष्ट्रीय मंच पर कहां खड़ा है। विदेश मंत्री ने मालदीव, चीन, पाकिस्तान और अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में डोनाल्ड ट्रम्प की वापसी की संभावना के संबंध में प्रमुख विचारों को संबोधित किया। मालदीव के साथ राजनयिक खिंचाव के बारे में जयशंकर ने कहा कि मुझे लगता है कि समय के साथ, हमारे बीच कोई मुद्दा नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि बाकी संबंध मजबूत हैं हमारे बीच कोई अस्पष्टता है और मुझे उम्मीद है कि इस विशेष मुद्दे को अनावश्यक रूप से खींचने के बजाय ध्यान केंद्रित किया जाएगा। चीन के साथ राजनयिक संबंधों पर मंत्री ने कहा कि हालांकि गंभीर समस्याएं हैं और चीन वास्तविक नियंत्रण रखा पर एक अलग रुख पेश कर रहा है, वह इसके लिए खड़े है। मैं कहूंगा कि मैं सैन्य दृष्टि से चुनौती के लिए तैयार हो गया हूँ। तथ्य यह है कि हम साल भर बहुत कठिन परिस्थितियों में इतने सारे सैनिकों को तैनात करने में सक्षम रहे हैं जो चीनी प्रतिक्रिया को रोकते हैं, वास्तव में कई मायनों में यह आपन आप में एक उपलब्धि है।

## सीएम ममता के खिलाफ भाजपा ने किया अनूठा प्रदर्शन, तस्वीर को पिलाया शहद



नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी के खिलाफ बीजेपी ने अनूठा प्रदर्शन किया है। जानकारी के अनुसार बीजेपी कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन के दौरान ममता की तस्वीर को शहर पिलाकर अपना विरोध जताया है। बता दें कि राज्य में बीजेपी अक्सर ममता बनर्जी के खिलाफ जोरदार तरीके से विरोध प्रदर्शन करती रही है, लेकिन इस बार राज्य की सीएम के खिलाफ विरोध का अनूठा तरीका अपनाया है। पार्टी कार्यकर्ताओं ने ममता बनर्जी की पीएम मोदी पर की गई आपतिजनक टिप्पणी के प्रति

बल देते हुए आरोप लगाया कि राज्य में नेता प्रतिपक्ष शुभेंद्रु अधिकारी और अन्य लोग भी बनर्जी के बारे में अपमानजनक तरीके से बात करते हैं। सीएम ने कथित तौर पर पश्चिम बंगाल के लिए ममता की बकवास धनराशि जारी करने की मांग को लेकर अपने हालिया परने के दौरान मोदी के खिलाफ कथित तौर पर आपतिजनक शब्द का इस्तेमाल किया था। भाजपा के युवा नेता इंद्रनील खान ने मीडिया से कहा कि सीएम ममता बनर्जी ने जिस तरह से मोदी जैसे सम्मानित नेता के बारे में बात की है, हम उसकी निंदा करते हैं। यह कार्य बंगाल की संस्कृति और हमारी विरासत के खिलाफ है। ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार पर तया लगाया आरोप? इसके बाद अपनी प्रतिक्रिया देते हुए टीएमसी प्रवक्ता कुणाल घोष ने कहा कि बनर्जी ने हमेशा अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों के प्रति सम्मानजनक रुख अपनाया है, लेकिन शुभेंद्रु अधिकारी जैसे भाजपा नेता उन्हें चूत कर रहे हैं और कांग्रेस जैसे अन्य गैर-भाजपा दलों के राष्ट्रीय नेताओं के बारे में भी अभद्र तथ्य अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। घोष ने कहा कि पहले उन्हें ऐसी अभिव्यक्तियों के लिए माफ़ी मांगनी चाहिए। दूसरी ओर तुण्णूल क्रिपस (टीएमसी) ने भाजपा के लिए आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता पर

## केवल गुजराती ही ठग हो सकते बयान पर तेजस्वी यादव ने मांगी माफ़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरातियों पर विवादित टिप्पणी कर फसे राष्ट्रीय जनता दल के नेता और पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने माफ़ी मांग ली है। बताया जा रहा है कि इस संबंध में उन्होंने देश के शीर्ष न्यायालय में हलफनामा दाखिल कर दिया है। इसके पहले तेजस्वी ने मामले को गुजरात के बाहर नई दिल्ली भेजने के लिए याचिका दाखिल की थी, जिसपर सुप्रीम कोर्ट ने आदेश सुरक्षित रख लिया था। तेजस्वी ने कथित तौर पर केवल गुजराती ही ठग हो सकते हैं टिप्पणी की थी, इस लेकर वह आपराधिक मानहानि के मामले का सामना कर रहे हैं। इसी मामले को उन्होंने विशेष रूप से दिल्ली में स्थानांतरित करने का अनुरोध किया है। न्यायमूर्ति ए एस ओका और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भूधरा की पीठ ने तेजस्वी की ओर से दायर माफ़ी के तलाब बयान को भी दर्ज पर लिया। सुप्रीम कोर्ट ने 29 जनवरी को तेजस्वी को अपनी कथित टिप्पणी केवल गुजराती ही ठग हो सकते हैं को वापस लेते हुए एक उचित बयान दाखिल करने का निर्देश दिया था। पच्चीस जनवरी को उन्होंने अपने अदालत में एक हलफनामा दायर कर अपनी कथित टिप्पणी वापस ले ली थी। खबरें हैं कि पहले दायर हलफनामे पर शिकायतकर्ता ने आपत्ति जताई थी, जिसके बाद कोर्ट की ओर से तेजस्वी को एक सप्ताह के अंदर बयान दाखिल करने के आदेश जारी किए गए थे। शिकायत के अनुसार, यादव ने मार्च 2023 में पटना में मीडिया से बात कर कहा था, वर्तमान स्थिति में केवल गुजराती ही ठग हो सकते हैं, और उनकी धोखाधड़ी भाग कर दी जाएगी। बिहार के तत्कालीन उमामयमंत्रों ने कथित तौर पर कहा था अगर वे एलआईसी या बैंकों का पैसा लेकर भाग गए तब कौन जिम्दार होगा? मेहता ने दावा किया कि यादव की टिप्पणियों ने सभी गुजरातियों की मानहानि की है।

## भाजपा पूरे देश में यूसीसी लागू नहीं कर सकती : रफीकुल इस्लाम

गुवाहाटी (एजेंसी)। एआईयूडीएफ के विधायक ने कहा है कि बीजेपी पूरे देश में यूसीसी लागू नहीं कर सकती है। उन्होंने बहुविधा विधेयक पर असम के सीएम से एक सवाल भी पूछा है। दरअसल भाजपा के नेतृत्व वाली उत्तराखंड सरकार ने समान नागरिक संहिता मसौदे को मंजूरी दे दी है और असम सरकार आगामी विधानसभा सत्र में बहुविवाह प्रतिबंध विधेयक पेश करने की तैयारी कर रही है। बीजेपी शासित राज्यों के फैसले पर एआईयूडीएफ ने कटाख किया है। विधायक रफीकुल इस्लाम ने केंद्र पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा के पास पूरे देश में यूसीसी को लागू करने का साहस नहीं है। उन्होंने कहा कि बीजेपी भी जानती है कि पूरे देश में यूसीसी लागू करना लगातार असंभव है क्योंकि कई धर्म, जातियां और समुदाय हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव से पहले यह भाजपा का यह कोरा दिखावा है। भाजपा भी जानती है कि देश में यूसीसी को लागू करना लगभग असंभव है क्योंकि धर्म, जाति और समान न्यायसभा का बजट सत्र 5 फरवरी से शुरू होगा। इस बजट सत्र में सरकार बहुविवाह प्रतिबंध विधेयक भी पेश कर सकती है।

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के कदावर नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद पवार की पार्टी एनसीपी में भीते साल जुलाई में बगावत हो गई थी। महाराष्ट्र की राजनीति में भीम पितामह कहे जाने वाले पवार को भीतीने ने ही दगा दिया। भीतीने की बगावत के पहले से ही चर्चे थे, लेकिन शरद पवार को बड़ा झटका दिलीप वलसे पाटिल के तौर पर लगा था। 7 बार के भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने दो सप्ताह के भीतर वापसी योग्य नोटिस जारी किया। अनुच्छेद 136 के तहत विशेष अनुमति याचिका यूबीटी के सदस्य सुनील प्रभु द्वारा दायर की गई है, जिसमें महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष द्वारा पारित दिनांक 10.01.2024 के आदेश को चुनौती दी गई है, जिसमें एक दूसरे के खिलाफ उद्भव तकरे समूह द्वारा दायर अयोग्यता याचिकाओं को खारिज कर दिया गया है। एनसीपी के नेता आशिष चव्हाण ने शिंदे और ठाकरे दोनों समूहों द्वारा एक-दूसरे के खिलाफ दायर अयोग्यता याचिकाओं को खारिज कर दिया। सीकर ने माना कि शिंदे समूह इस आधार पर 'असली' शिवसेना है कि जून 2022 में जब प्रतिद्वंद्वी गुट उभरे तो उनके पास विधायी बहुमत (विधायकों का बहुमत) था। सीकर ने शिंदे द्वारा नियुक्त द्वा की भी अधिकारिक विधि के रूप में मान्यता दी। शिवसेना पार्टी की ओर से कहा गया कि शिंदे समूह के विधायकों द्वारा विधि का कोई उल्लंघन नहीं किया गया।

## अजित से ज्यादा पाटिल के जाने का शरद पवार को दुख, अब किया ये फैसला

शरद पवार के सबसे भरोसेमंद लोगों में से एक माना जाता था। माना जा रहा है कि इस रैली के साथ ही शरद पवार महाराष्ट्र में अपने चुनाव अभियान की भी शुरुआत कर सकते हैं। गौरतलब है कि यहां से अजित पवार लोकसभा चुनाव के टिकट के लिए भी भाजपा से दावेदारी उठक रहे हैं। भाजपा नेतृत्व को उन्होंने इसका प्रस्ताव रख दिया है। इसके अलावा बारामती सीट पर भी अजित पवार की नजर है। बारामती वहीं सीट है, जहां से सुप्रिया सुले सांसद हैं। यह सीट लंबे समय से एनसीपी के पास है, लेकिन अजित गुट या फिर भाजपा के किसी उम्मीदवार से मुकाबला हुआ तब इस बात चलेज होगा। इसकी वजह यह है कि बारामती में अजित के बारे में सोचा भी नहीं था। फिलहाल इस बात पर नजर है कि रैली में पवार पाटिल को लेकर क्या कहने वाले हैं। कभी पाटिल को

## 'असली शिवसेना' पर अभी भी सियासी जंग जारी, स्पीकर के फैसले के खिलाफ याचिका पर सुप्रीम कोर्ट तैयार

मुंबई (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट 5 फरवरी को शिवसेना के एक सदस्य (उद्भव बालसाहेब ठाकरे) द्वारा दायर याचिका को स्वीकृत करने पर सहमत हो गया, जिसमें संविधान के दसवीं अनुसूची के तहत शिवसेना (एकनाथ शिंदे) के विधायकों को अयोग्य ठहराने के महाराष्ट्र अथर्व के इन्कार को चुनौती दी गई थी। याचिकाकर्ता सुनील प्रभु की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के समक्ष मामले का उल्लेख करते हुए कहा कि याचिका आज स्वीकृत नहीं की गई है, हालांकि इस पर आज सुनवाई होनी है। कोर्ट ने

22 जनवरी को याचिका पर नोटिस जारी करते हुए मामले की तारीख 5 फरवरी (आज) तय की थी। इसके बाद सीजेआई चंद्रचूड़ मामले को स्वीकृत करने पर सहमत हुए। 22 जनवरी को भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने दो सप्ताह के भीतर वापसी योग्य नोटिस जारी किया। अनुच्छेद 136 के तहत विशेष अनुमति याचिका यूबीटी के सदस्य सुनील प्रभु द्वारा दायर की गई है, जिसमें महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष द्वारा पारित दिनांक 10.01.2024 के आदेश को चुनौती दी गई है, जिसमें एक दूसरे के खिलाफ उद्भव तकरे समूह

द्वारा दायर अयोग्यता याचिकाओं को खारिज कर दिया गया है। एनसीपी के नेता आशिष चव्हाण ने शिंदे और ठाकरे दोनों समूहों द्वारा एक-दूसरे के खिलाफ दायर अयोग्यता याचिकाओं को खारिज कर दिया। सीकर ने माना कि शिंदे समूह इस आधार पर 'असली' शिवसेना है कि जून 2022 में जब प्रतिद्वंद्वी गुट उभरे तो उनके पास विधायी बहुमत (विधायकों का बहुमत) था। सीकर ने शिंदे द्वारा नियुक्त द्वा की भी अधिकारिक विधि के रूप में मान्यता दी। शिवसेना पार्टी की ओर से कहा गया कि शिंदे समूह के विधायकों द्वारा विधि का कोई उल्लंघन नहीं किया गया।



## जर्मनी में यहूदी छात्र की पिटाई, अस्पताल में भर्ती

बर्लिन। जर्मनी के बर्लिन शहर एक कॉलेज छात्र ने इजराइल-हमास संघर्ष पर बहस से आक्रोशित होकर अपने एक यहूदी सहपाठी को पिटाई कर दी, जिसके बाद यहूदी छात्र को अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया 30 वर्षीय यहूदी छात्र एक परिचित के साथ बर्लिन के नजदीक मिले गया था, तभी मुलाकात विश्वविद्यालय के 23 वर्षीय साथी छात्र से हुई। पुलिस ने बताया कि 23 वर्षीय छात्र फलस्तरिन समर्थक है जबकि 30 वर्षीय यहूदी छात्र ने इजराइल के समर्थन में सोशल मीडिया पर पोस्ट साझा किया था। जिसके बाद दोनों को इस मुद्दे पर तीखी बहस हुई। पुलिस के मुताबिक, बहस से उग्र हुए 23 वर्षीय छात्र ने 30 वर्षीय यहूदी छात्र के चेहरे पर तब तक घूंसे मारे जब तक कि वह जमीन पर गिर नहीं गया। संदिग्ध ने यहूदी छात्र के जर्मनी पर गिरने पर लात से भी वार कर मोकै से फरार हो गया। पुलिस ने बताया कि पीड़ित को चेहरे पर फे़र आए हैं और अस्पताल में भर्ती कराया गया है, लेकिन वह खतरे से बाहर है। पुलिस ने बर्लिन के शोन्बर्ग स्थित संदिग्ध के आवास की तलाशी ली और उसके स्मार्टफोन सहित अन्य सबूत एकत्र किए। मामले की जांच की जा रही है।

## लिसिवांस्क शहर में बेकरी पर हमला, 28 लोगों की मौत

मॉस्को। रूस के नियंत्रण वाले लिसिवांस्क शहर में एक बेकरी पर हुए यूक्रेन के हमले में करीब 28 लोगों की मौत हो गई। रूसी अधिकारियों ने इसकी जानकारी दी। इस हमले में मारे गए लोगों में एक बच्चा भी शामिल है। उन्होंने कहा कि आपात सेवा कर्मियों ने मलबे के अंदर से 10 लोगों को बाहर निकाला है। वही, कीव में यूक्रेन के अधिकारियों ने इस घटना पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

## इरान समर्थित लड़ाकों ने हमला किया तो अमेरिका की सेना देगी मुंहतोड़ जवाब

वाशिंगटन। अमेरिका ने कहा कि यदि इरान समर्थित लड़ाकों ने फिर से हमला किया तो अमेरिका की सेना उन्हें मुंहतोड़ जवाब देगी। बता दें कि अमेरिका ने शनिवार को ही ब्रिटेन के साथ मिलकर यमन में हूती विद्रोहियों के 36 ठिकानों पर हमले किए हैं। हूती विद्रोही इजराइल हमला युद्ध के बाद से ही अमेरिकी ठिकानों और अंतरराष्ट्रीय शिपिंग रूट पर लाल सागर और अरब सागर में हमले कर रहे हैं। अब अमेरिका ने रविवार को चेतावनी दी कि अगर इरान या उसके समर्थित लड़ाकों ने अमेरिकी सेनाओं पर फिर हमले किए तो उनका भी सख्ती से जवाब दिया जाएगा। हालांकि अमेरिका ने साफ़ किया कि वह पश्चिम एशिया में एक और लड़ाई शुरू करने के पक्ष में नहीं है। अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवन ने मीडिया से कहा कि हम किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं। दरअसल बीती 28 जनवरी को जॉर्डन में अमेरिकी के सैन्य ठिकानों पर इरान समर्थित लड़ाकों ने हमला किया था। इस हमले में तीन अमेरिकी सैनिकों की मौत हो गई थी। यह झोन हमला इराक में इरान समर्थित लड़ाकों ने किया था। हालांकि इरान ने बयान जारी कर दावा किया था कि इस हमले में उसका कोई हाथ नहीं है और लड़ाकों ने खुद यह हमला किया है। इस पर सुलिवन ने कहा कि राष्ट्रपति बाइडेन नहीं चाहते कि पश्चिम एशिया में एक और लड़ाई छिड़े, लेकिन अगर अमेरिका के सैनिकों या नागरिकों पर हमला होगा तो हम सख्ती से उनका जवाब देंगे। इरान समर्थित लड़ाकों को शांत करने के लिए उनके खिलाफ कई और कदम उठाए जाएंगे।

## चिली के जंगल में लगी आग से मरने वालों की संख्या बढ़कर 112 हुई

चिली। मध्य और दक्षिण क्षेत्र में 92 जंगलों में आग लगी है। बड़ी चिंता है कि आग घनी आबादी वाले क्षेत्रों की ओर फैल रही है। इससे लोगों, घरों और सुविधाओं के प्रभावित होने की चिंता बढ़ गई है। दक्षिण अमेरिकी देश चिली के जंगलों में आग भड़कने से 112 लोग मारे गए, जबकि 1100 से ज्यादा घर राख हो गए। आपातकालीन सेवा विभाग हेलिकॉप्टर व ट्रकों की मदद से शहरी इलाकों में आग बुझाने का प्रयास कर रहा है। बड़ी संख्या में लोग झुलस गए हैं, जिसके कारण मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। लगभग 10 लाख की आबादी वाले मध्य चिली के वालपाराइसो क्षेत्र के कई हिस्सों में काला धुआं फैला हुआ है। बताया जा रहा है कि तटीय शहर वीना डेल मार के आसपास के इलाके सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। गृह मंत्री कैरोलिना टोहा ने कहा, वालपाराइसो की स्थिति सबसे ज्यादा भयावह है। सड़कों पर भी लोगों के शव मिल रहे हैं। वर्ष 2010 के भूकंप के बाद चिली में यह सबसे बड़ी आपदा है। तब भूकंप के कारण लगभग 500 लोग मारे गए थे। राष्ट्रपति गिब्रियल बोरिक ने कहा कि स्थिति बहुत नाजुक है। फिलहाल आग 43 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में फैल चुकी है। भीषण आग ने शहर के पहाड़ी इलाके विला इंफेर्नोसिया को भी अपनी चपेट में ले लिया है। सड़कों पर जली हुई कारें खड़ी दिखाई दे रही हैं। मध्य और दक्षिण क्षेत्र में 92 जंगलों में आग लगी है। पिछले साल यहाँ रिक्तों गमी के दौरान लगी आग में 27 लोगों की मौत हो गई और 400,000 हेक्टेयर से अधिक भूमि प्रभावित हुई थी।

## पाकिस्तान में आतंकियों को उम्मीदवार बना दिया, हाफिज के रिश्तेदार लड़ेंगे चुनाव

इस्लामाबाद, (ईएमएस)। पाकिस्तान में 8 फरवरी को होने वाले आम चुनाव में आतंकियों को उम्मीदवार बना दिया गया है। जानकारी के अनुसार मुस्लिम लीग नाम की एक नई राजनीतिक पार्टी चुनाव में भाग लेगी। इस राजनीतिक दल को 2008 के मुईब आतंकवादी हमलों के मास्टरमाइंड हाफिज सईद के प्रतिबंधित संगठनों का एक नया चेहरा माना जाता है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि इस संगठन द्वारा पाकिस्तान के विभिन्न शहरों से नामांकित कुछ उम्मीदवार ऐसे हैं जो या तो हाफिज सईद के रिश्तेदार हैं या अतीत में प्रतिबंधित लश्कर-ए-तैयबा, जमात-उद-दावा या मिल्ली मुस्लिम लीग से जुड़े रहे हैं। दरअसल पाकिस्तान की आतंकवाद रोधी अदालतों ने टेरर फंडिंग के कई मामलों में हाफिज सईद को कुल 31 साल की सजा सुनाई है। वह फिलहाल लाहौर की एक जेल में बंद है। उसे 10 दिसंबर 2008 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा वैश्विक आतंकवादियों की सूची में शामिल किया गया था। पाकिस्तान ने लश्कर-ए-तैयबा, जमात-उद-दावा और उसके सहयोगी दलों और संस्थानों को भी सूचीबद्ध किया है, जिनमें खेर नास इंटरनेशनल ट्रस्ट, फलाह इंसायामेंट फाउंडेशन, अल-अनुफाल ट्रस्ट, खतआब खालिक इंस्टीट्यूशन, अल-दावत अल-अरशाद, अल-हमद ट्रस्ट, अल-मदीना फाउंडेशन और म्यू अब्ज निज जबल एजुकेशनल ट्रस्ट प्रतिबंधित संगठनों की सूची में शामिल हैं। बताया जा रहा है कि हाफिज सईद का बेटा तहसा सईद भी इस बार चुनाव लड़ रहा है। पार्टी के एक प्रवक्ता ने सईद के संगठनों के साथ किसी भी तरह के जुड़ाव से इनकार किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि हाफिज सईद का बेटा तहसा सईद मरकजी मुस्लिम लीग पार्टी से चुनाव में भाग ले रहा है और लाहौर में नेशनल असंबली निवाचन क्षेत्र एनए-122 से चुनाव लड़ रहा है। यह वही निवाचन क्षेत्र है जहां से पाकिस्तान मुस्लिम लीग चुनाव नेता और पूर्व संघीय मंत्री ख्वाजा साद रफीक भी चुनाव लड़ रहे हैं। इसी तरह सईद का दामाद हाफिज नेक गुजर मरकजी मुस्लिम लीग के टिकट पर चुनाव लड़ रहा है। पिछले दिनों जमात-उद-दावा से जुड़े कुछ लोगों ने मिल्ली मुस्लिम लीग पार्टी से 2018 के चुनाव में भाग लेने की कोशिश की थी, लेकिन पाकिस्तान के चुनाव आयोग ने तत्कालीन सरकार के विरोध के बाद संगठन पर प्रतिबंध लगा दिया और पंजीकरण के लिए उसके आवेदन को खारिज कर दिया। मिल्ली मुस्लिम लीग का नाम पाकिस्तान में प्रतिबंधित पार्टियों की सूची में शामिल नहीं है, लेकिन 2018 में अमेरिकी टेररी विभाग ने विदेश विभाग की मंजूरी से इस पार्टी को प्रतिबंधित घोषित कर दिया और इससे जुड़े सात लोगों को वैश्विक आतंकवादियों की सूची में शामिल किया। जिन लोगों को अमेरिका ने अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी घोषित किया था उनमें सैफुल्ला खालिद, मुजम्मिल इकबाल हाशमी, मुहम्मद हारिस डार, ताबिश कयूम, फैयाज अहमद, फैसल नदीम और मुहम्मद पहसान के नाम शामिल थे।

## सैमसंग के प्रमुख ली जे यांग वित्तीय अपराधों से बरी

सियोल। दक्षिण कोरियाई अदालत ने शेयर मूल्यों में हेरफेर करने और 2015 में सैमसंग की दो सहायक कंपनियों के विवादस्पद वित्त के संबंध में धोखाधड़ी के आरोपी सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स के चेयरमैन ली जे यांग को बरी कर दिया है। यांग पर दक्षिण कोरिया की सबसे बड़ी कंपनी पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए वित्त कराने का आरोप था। सियोल सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट के फैसले से सैमसंग के शीर्ष पदाधिकारी की कानूनी मुश्किलें कम हो सकती हैं। यांग को भ्रष्टाचार के मामले में पूर्व राष्ट्रपति को रिक्त देने का दोषी पाया गया था लेकिन सजा को माफ़ कर दिया गया था।



रियाद में सऊदी अरब के वायुसैनिक एयर शो में शामिल हुए।

## पाकिस्तान में पनाह ले रहे आतंकवादियों की सूची तैयार करे भारत, संयुक्त राष्ट्र प्रतिबंधों का राजनीतिकरण करने के लिए उठाना चाहिए कदम

वाशिंगटन (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के एक संसदीय पैराल ने कहा कि भारत को लश्कर-ए-तैयबा (एल्टई) के नेता हाफिज तल्हा सईद और जैश-ए-मोहम्मद (जेएम) के नेता अब्दुल रऊफ अस्मर सहित चार पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों की सूची तैयार करने का राजनीतिकरण करने के लिए कदम उठाना चाहिए। संसद में पेश की गई वैश्विक आतंकवाद का मुकाबला करने पर अपनी रिपोर्ट में नए पर अपनी रिपोर्ट में, विदेश

मामलों की संसदीय समिति ने कहा कि इस्लामिक स्टेट ऑफ खुरासान प्रांत (आईएस्कपी) के हिस्से के रूप में जम्मू और कश्मीर में अपने क्षेत्र का विस्तार आतंकवादी समूहों के साथ गठबंधन कर रहे हैं और गलत सूचना और कट्टरपंथी प्रथाओं के माध्यम से भारत में हमलों को उकसाने के लिए सांप्रदायिक तनाव के अवसर का फायदा उठाने को कोशिश कर रहे हैं।

सिफारिशें पिछले कुछ वर्षों में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों को मंजूरी देने के भारत और उसके पश्चिमी सहयोगियों जैसे फ्रांस और अमेरिका के प्रयासों को चीन द्वारा लगातार अवरुद्ध करने की पुश्तभूमि में आई हैं। 2021-22 में सुरक्षा परिषद में अपने कार्यकाल के दौरान, भारत ने पांच पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों जैएम के अब्दुल रऊफ अस्मर, लश्कर के अब्दुल रहमान मर्क़ी, साजिद मीर, शाहिद महमूद और तल्हा सईद के नाम सूचीबद्ध करने के लिए यूएनएससी 1267 प्रस्तुत किए। प्रतिबंध समिति ने जनवरी 2023 में लश्कर-ए-तैयबा के संस्थापक हाफिज सईद के करीबी सहयोगी मर्क़ी को सूचीबद्ध करने को स्वीकार कर लिया।

2016 से इस्लामिक स्टेट तथाकथित इस्लामिक स्टेट ऑफ खुरासान प्रांत (आईएस्कपी) के हिस्से के रूप में जम्मू और कश्मीर में अपने क्षेत्र का विस्तार करने की अस्फल कोशिश कर रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दिखाने के लिए, इस्लामिक स्टेट-कोर ने मई 2019 में विलाया हिंद की स्थापना का प्रचार जारी किया। समिति की

## उनका देश भारत में ज्यादा से ज्यादा निवेश करना चाहता है: फ्रांसिस राष्ट्रपति मैक्रों

पेरिस (एजेंसी)। फ्रांसिस राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने एक वीडियो साक्षात्कार में कहा कि हालिया भारत-द्वारा की इकलविकी दिखाई गई है। वीडियो के साथ ही उन्होंने जोर देकर कहा कि उनका देश भारत में ज्यादा से ज्यादा निवेश करना चाहता है। फ्रांसीसी राष्ट्रपति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर नई दिल्ली आए थे और वह 26 जनवरी को 75वें गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि थे।

फ्रांसिस राष्ट्रपति मैक्रों ने कहा कि विश्व में बदलाव की पहली पॉकि में भारत आने वाला है। उन्होंने लिखा कि भारत जैसे देश के पास लोकातांत्रिक शांति, जनसांख्यिकी, आर्थिक और तकनीकी शक्ति है, जिससे वह दुनिया में बदलाव की पहली पॉकि में होगा।

उन्होंने कहा कि वह नई दिल्ली में 75वें गणतंत्र दिवस समारोह का हिस्सा बनकर बेहद सम्मानित महसूस कर रहे थे। मैक्रों ने कहा, हम इस तरह के एक महत्वपूर्ण और अनोखे दिन का हिस्सा बनने पर बेहद सम्मानित महसूस कर रहे थे। यह हमेशा हमारी यादों में रहेगा। उन्होंने कहा, बीते कुछ वर्षों के दौरान हमने आपके देश के साथ विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और साझेदारियों को बढ़ाया है। हम निश्चित रूप से भारत में अधिक से अधिक निवेश करना चाहते हैं। भले ही



था-फ्रांस और भारत की दोस्ती जिंदाबाद। मैक्रों ने कहा था कि दोनों देशों के बीच तालमेल अद्वितीय है और समय और साझा मूल्यों से परि है। वहीं फ्रांसिस राष्ट्रपति मैक्रों के पोस्ट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि मैक्रों को भारत यात्रा और गणतंत्र दिवस परेड में शामिल होने से निश्चित तौर पर भारत-फ्रांस की दोस्ती को बढ़ावा मिलेगा। पीएम ने मैक्रों के पोस्ट को टैग कर कहा कि भारत में आपका होना सम्मान की बात है।

## 10 मई तक देश छोड़ देंगे भारतीय सैनिक, संसद में मुद्देजजू ने फिर दोहराया भारत विरोधी रुख, विपक्ष ने किया बहिष्कार

माले (एजेंसी)। अपने पहले संसद भाषण में मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुद्देजजू ने सोमवार को अपने भारत विरोधी रुख को दोहराते हुए कहा कि देश अपनी संप्रभुता में किसी भी हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देगा। ये टिप्पणियाँ 10 मई तक मालदीव से भारतीय सैनिकों की वापसी के लिए नई दिल्ली और माले के बीच एक समझौते का पालन करती हैं। चीन समर्थक नेता के रूप में जाने जाने वाले मुद्देजजू ने कहा कि उनका मानना है कि मालदीव के अधिकार लोग उनके प्रशासन का समर्थन करते हैं। उम्मीद है कि वे देश से विदेशी सैन्य उपस्थिति हटा देंगे।

हिंद महासागर द्वीपसमूह में तैनात लगभग 80 सैनिकों का स्थान नागरिकों द्वारा लिया जाएगा। पिछले हफ्ते, विदेश मंत्रालय ने कहा था कि दोनों पक्ष मानवीय सेवा प्रदान करने वाले भारतीय विमान प्लेटफार्मों के निरंतर संचालन को सक्षम करने के लिए पारस्परिक रूप से व्यावहारिक समाधानों के एक सेट पर सहमत हुए हैं। पिछले साल मोहम्मद मुद्देजजू के मालदीव के राष्ट्रपति चुने जाने के बाद से माले के साथ नई दिल्ली के संबंध तनाव में हैं, उन्होंने देश की भारत प्रथम नीति को समाप्त करने का वादा किया था। मालदीव ने द्विपक्षीय सहयोग से संबंधित कई मुद्दों पर



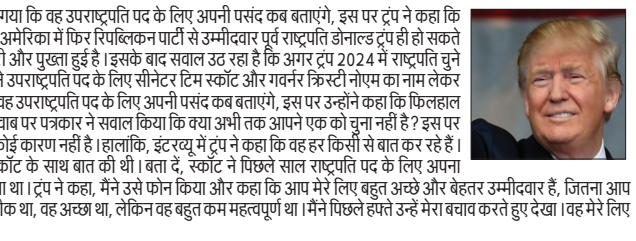
भारतीय राजधानी में एक उच्च स्तरीय बैठक में बनी सहमति का हवाला देते हुए पहले कहा था कि भारतीय सैनिकों का पहला समूह 10 मार्च तक और बाकी 10 मई तक रवाना हो जाएंगे।

इससे पहले आज, मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी (एमडीपी) ने संसद में मुद्देजजू के उद्घाटन भाषण का बहिष्कार किया। एक अन्य विपक्षी दल, डेमोक्रेटिक पार्टी (एमडीपी) में शामिल हो गया, और कहा कि कैबिनेट के तीन सदस्यों को, जिन्हें संसद ने पिछले सप्ताह

खारिज कर दिया था, बैठक में आमंत्रित किया गया था। मालदीव के आस्ट्रेलेंट सर्ज-अननलान इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार, संसद में बहुमत रखने वाली एमडीपी ने कहा कि मुद्देजजू के संबोधन का बहिष्कार करने का उसका निर्णय संसद के सम्मान को कम करना है। स्थायी मीडिया ने बताया कि द्वीप राष्ट्र के राष्ट्रपति को संबोधन के अनुसार वर्षों के पहले कार्यकाल के पहले सत्र में संसद को संबोधित करना आवश्यक है।

## पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उपराष्ट्रपति पद के लिए नहीं जाहिर की अपनी पंसद

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से पूछा गया कि वह उपराष्ट्रपति पद के लिए अपनी पंसद कब बताएंगे, इस पर ट्रंप ने कहा कि फिलहाल कुछ समय नहीं, लेकिन बहुत सारे अच्छे लोग हैं। अमेरिका में फिर रिपब्लिकन पार्टी से उम्मीदवार पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ही हो सकते हैं। आयोगी कोकस में शानदार जीत के बाद उनकी दावेदारी और पुख्ता हुई है। इसके बाद सवाल उठ रहा है कि अगर ट्रंप 2024 में राष्ट्रपति चुने जाते हैं तब उपराष्ट्रपति कौन होगा। इस बीच, पूर्व राष्ट्रपति ने उपराष्ट्रपति पद के लिए सीनेटर टिम स्कॉट और गवर्नर क्रिस्टी नोएन का नाम लेकर अफवाहों को हवा दी है। एक इंटरव्यू में ट्रंप से पूछा गया कि वह उपराष्ट्रपति पद के लिए अपनी पंसद कब बताएंगे, इस पर उन्होंने कहा कि फिलहाल कुछ समय नहीं। लेकिन बहुत सारे अच्छे लोग हैं। ट्रंप के जवाब पर पत्रकार ने सवाल किया कि क्या अभी तक आपने एक को चुना नहीं है? इस पर ट्रंप ने कहा, मैंने अभी चुनाव नहीं किया है और इसके पीछे कोई कारण नहीं है। हालांकि, इंटरव्यू में ट्रंप ने कहा कि वह हर किसी से बात कर रहे हैं। इस दौरान यह भी खुलासा किया कि उन्होंने हाल ही में स्कॉट के साथ बात की थी। बता दें, स्कॉट ने पिछले साल राष्ट्रपति पद के लिए अपना नामांकन वापस ले लिया था और फिर ट्रंप का समर्थन किया था। ट्रंप ने कहा, मैंने उसे फोन किया और कहा कि आप मेरे लिए बहुत अच्छे और बेहतर उम्मीदवार हैं, जितना आप अपने लिए हैं। उन्होंने कहा, जब मैंने टिम को देखा तब वह ठीक था, वह अच्छा था, लेकिन वह बहुत कम महत्वपूर्ण था। मैंने पिछले हफ्ते उन्हें मना कराकर बहाल करवा दिया। वह मेरे लिए लड़ रहे हैं।



## सबसे बकवास आदमी है...बाइडेन ने नेतन्याहू को लेकर ऐसा क्यों कहा? व्हाइट हाउस ने बताया सच

वाशिंगटन (एजेंसी)। इजरायल-हमास संघर्ष को लेकर दोनों नेताओं के बीच बढ़ते तनाव के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इजरायल के प्रधानमंत्री बेजर्मिन नेतन्याहू को बकवास आदमी कहा। पोलिटिको ने अनाम स्रोतों का हवाला देते हुए रिपोर्ट में कहा कि जैसे ही युद्ध अपने पांचवें महीने में प्रवेश कर गया बाइडेन नेतन्याहू से सावधान हो गए और निजी तौर पर उन्हें बकवास आदमी बताते नजर आ रहे हैं। रिपोर्ट को खारिज करते हुए, बाइडेन के प्रवक्ता एड्र्यू वेदर्स ने आस्ट्रेलेंट को बताया कि दोनों नेताओं के बीच दशकों पुराना रिश्ता है जो सार्वजनिक और निजी तौर पर सम्मानजनक है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति ने ऐसा नहीं कहा, न ही वह ऐसा कहेंगे। एक क्षेत्रीय सम्मेलन के हिस्से के रूप में फिलिस्तीनी राज्य की संभावना जिसमें

इजराइल और सऊदी अरब के बीच संबंधों को सुधारना शामिल होगा। हाल के हफ्तों में नेतन्याहू और व्हाइट हाउस के अधिकारियों के बीच तनाव पैदा कर दिया है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि कुछ डेमोक्रेट, विशेष रूप से उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को यह एहसास होना शुरू हो गया है कि युद्ध में इजराइल के लिए प्रशासन का समर्थन उन्हें 2024 के राष्ट्रपति चुनाव में युवा मतदाताओं के महत्वपूर्ण समर्थन से वंचित कर सकता है। इजराइल के राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री, इलामार बेन गिवर ने गाजा संघर्ष से निपटने के लिए बिडेन प्रशासन की आलोचना की, उन्होंने दावा किया कि इससे हमास को मदद मिली और ट्रंप सरकार के तबत इजराइल के लिए इससे निपटना बेहतर होता है। बेन गिवर ने रविवार को प्रकाशित वॉल स्ट्रीट जर्नल के

साथ एक साक्षात्कार में कहा कि हमें अपना पूरा समर्थन देने के बजाय राष्ट्रपति बाइडेन मानवीय सहायता और ईंधन देने में व्यस्त हैं, जो हमास को जाता है। अगर ट्रंप सत्ता में होते, तो अमेरिकी आचरण पूरी तरह से अलग होता। पिछले महीने एक अभियान कार्यक्रम के दौरान, रिपब्लिकन नेता ट्रंप ने बाइडेन को संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास में सबसे खराब राष्ट्रपति कहा था और दावा किया था कि अगर वह राष्ट्रपति होते तो रूस ने इजराइल के कभी हारना नहीं किया होता। बेन गिवर की टिप्पणियों को नेतन्याहू और नेतन्याहू के तीन-सदस्यीय युद्ध मंत्रिमंडल के सदस्य बेनो गेट्टु ने खारिज कर दिया, उन्होंने दावा किया कि वह अमेरिका-इजरायल को जबरदस्त नुकसान पहुंचा रहे थे।



## ऑस्ट्रेलियाई-चीनी लेखक यांग हेगजुन की मौत की सजा स्थगित

बीजिंग। ऑस्ट्रेलियाई-चीनी लेखक यांग हेगजुन को दी गई मौत की सजा स्थगित हो गई है। मिली जानकारी के अनुसार लेखक यांग हेगजुन को जासूसी के आरोप में गिरफ्तार किए जाने के पांच साल बाद चीनी अदालत ने मौत की सजा को निलंबित कर दिया है। ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री के मुताबिक, दो साल बाद सजा को उम्रकैद में बदला जा सकता है। डॉ. यांग जो एक विद्वान और उपन्यासकार हैं जिन्होंने चीनी मामलों के बारे में ब्लॉग किया है। वह अपने खिलाफ लगे आरोपों से इनकार करते हैं, जिन्हें सार्वजनिक नहीं किया गया है। यांग को 2019 में गुआंगजो हवाई अड्डे पर एक अज्ञात विदेशी देश के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। लोकतंत्र समर्थक ब्लॉगर एक ऑस्ट्रेलियाई नागरिक है जिसका जन्म चीन में हुआ था। इस मामले में ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री पेनी वॉंग ने सोमवार को कहा कि सरकार इस फैसले से स्तब्ध थी, और उन्होंने कैमबरा की आपति दर्ज कराने के लिए चीनी राजदूत को बुलाया था। चीन में यांग की हिरासत चीनी और ऑस्ट्रेलियाई सरकारी के बीच घर्षण का एक प्रमुख बिंदु रही है। वॉंग ने कहा कि ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने लगातार और उच्चतर स्तर पर उनकी वकालत की थी। वॉंग ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया डॉ. यांग के हितों और भलाई के लिए हमारी वकालत से पीछे नहीं हटेगा। सभी ऑस्ट्रेलियाई डॉ. यांग को उनके परिवार से दबावा मिलते हुए देखा चाहते हैं। सोमवार को सामने आई सजा को औपचारिक रूप से दो साल की सजा के साथ मौत की सजा के रूप में दिखाया गया है। यह एक अपेक्षाकृत सामान्य सजा है जो दो साल के अच्छे व्यवहार के बाद मौत की सजा को 25 साल या आजीवन कारावास में बदलने की अनुमति देती है। फेंग ने कहा कि यांग की हिरासत, मुकदमा और सजा एक गंभीर अन्याय था, लेकिन डॉ. यांग खराब स्वास्थ्य के कारण अपील नहीं कर पाएंगे।

## चुनाव से पहले पाकिस्तान में बड़ा आतंकी हमला, 10 पुलिसकर्मियों की मौत

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में एक पुलिस स्टेशन पर बड़ा आतंकी हमला हुआ है। आतंकी हमले में 10 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई है। वहीं हमले में छह लोग घायल हैं। अब तक हमले की जिम्मेदारी किसी आतंकी संगठन ने नहीं ली है।

पाकिस्तान में आठ फरवरी को होने वाले चुनावों से पहले ही ये आतंकी हमला हुआ है, जिससे देश में लोगों की सुरक्षा की व्यवस्था पर भी सबालिया निशान छड़े हुए गए। पाकिस्तान पुलिस का कहना है कि खैबर पख्तूनख्वा के डेरा इस्माइल खान जिले में एक पुलिस स्टेशन पर हमला हुआ है। हमले में 10 लोगों की मौत हुई है। छह पुलिसकर्मी भी हमले में घायल हुए हैं। पुलिस का कहना है कि दरबान तहसील में सुबह तीन बजे आतंकीयों ने भारी हथियारों से पुलिस स्टेशन पर धावा बोलकर हमला कर दिया। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार हमले में घायल लोगों को डीएचव्यू अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। आतंकीयों ने पुलिस स्टेशन को चारों तरफ से घेरा था और ग्रेनेड से हमले किए थे। आतंकीयों ने पुलिस स्टेशन पर भारी गोलीबारी भी की थी। इस घटना पर आला अधिकारियों ने बताया कि पुलिस ने रात के अंधेरे में ही आतंकीयों पर जवाबी कार्रवाई की। हालांकि पुलिस इस दौरान आतंकीयों को पकड़ने में सफल नहीं हो सकी और आतंकी भागने में सफल रहे। रिपोर्ट्स का कहना है कि पुलिस ने आतंकी हमले के बाद पूरे इलाके में घेराबंदी कर सुरक्षा व्यवस्था को बढ़ाया है। पुलिस की टैमें भाग निकले आतंकीयों को ढूंढने के लिए लगातार तलाशी अभियान चला रही है। पुलिस की ड्रिक रियक्शन फोर्स भी घटना स्थल पर पहुंच गई हैं।

## बदले की भावना से स्वयं का नुकसान

जब कभी भी आप अपने क्रोध का करीब से निरीक्षण करेंगे तो पाएंगे कि इसके मूल में आपके आत्मसम्मान या अभिमान में लगी ठेस, सपनों का टूटना या कोई ऐसा ही कारण रहा होगा, जिससे आप हतप्रभ रह गए होंगे।



हालांकि ये कारण ऐसे हैं, जिनसे बिना क्रोध किए भी आसानी से निबटा जा सकता है। फिर आप क्रोध क्यों करते हैं? हम सभी के पास कुछ न कुछ ऐसा है, जिसे हम एक-दूसरे को जाने बिना भी दे सकते हैं। यह कुछ आखिर है क्या, जिसे किसी अपरिचित को भी दिया जा सकता है। क्या नुकसान की आशंका में इससे कोई तनाव उत्पन्न नहीं होगा? आपको आश्चर्य होगा, लेकिन यह सच है कि इससे आपको कोई नुकसान नहीं होगा, बल्कि आपके अंतरतम में पहले से मौजूद तनाव भी कहीं तिरोहित हो जाएगा। आज हर कोई गुस्से से पागल हुआ जा रहा है। बचे-बूढ़े भी इससे अछूते नहीं हैं।

### क्रोध है शैतान

दरअसल, क्रोध एक ऐसी समस्या है, जिसकी तुलना शैतान से की गई है। इसका संबंध सिर्फ बुरी भावनाओं या मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिकता से भी है। हॉरेस के अनुसार क्रोध क्षणिक पागलपन है, जबकि शौमस फ्यूलेर इसे समुद्र में उठा तूफान मानते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि क्रोध के दुष्परिणामों से डरकर हम इसका दमन शुरू कर दें। क्रोध का दमन अक्सर गंभीर परिणामों को जन्म देता है, जिससे क्रोध करने वाला तो प्रभावित होता ही है, कई निर्दोष भी प्रभावित हो जाते हैं। हम अचानक ही एक दिन में क्रोध करना नहीं छोड़ सकते। क्रोध पर नियंत्रण एक क्रमिक प्रक्रिया है। क्रोध पर नजर रखते हुए इसकी तीव्रता को धीरे-धीरे कम किया जा सकता है। अस्तु के अनुसार क्रोध कोई भी कर सकता है। यह बहुत आसान है, लेकिन सही समय, सही कारण, सही व्यक्ति व सही दिशा में इसका प्रक्षेपण आसान नहीं है।

### निंदा से बचें

क्रोध से दूर रहने की पहली शर्त यह है कि आप निर्दोष व्यक्ति, समाज व राष्ट्र की निंदा से बचें। फिर भी यदि आपको गुस्सा आता है तो इसका प्रदर्शन सतही ही रखें। मन में बदले की भावना न रखें। इसके लिए अपनी उन भावनाओं और कारणों को महत्व न दें, जो आपको क्रोध की अग्नि में जलने को मजबूर कर दें। ये भावनाएं या कारण ऐसे हैं, जिनसे क्रोध के बगैर भी आसानी से निबटा जा सकता है। फिर आप क्रोध क्यों करते हैं? क्रोध पर नियंत्रण करना आप आसानी से सीख सकते हैं और अभ्यास के द्वारा इसमें महारत भी हासिल कर सकते हैं। यदि आप जीवन में अपराध व हिंसा से मुक्त रहने की कोशिश करें तो इस संसार में काफी कुछ बदला जा सकता है। हम और याद रचनात्मक हो सकते हैं। इसके लिए क्रोध करना जरूरी नहीं है। यदि कुछ जरूरी है तो वह है अपनी मानवीय भावनाओं को सिर्फ उजागर करना।

## जानिए रुद्राक्ष के वैदिक रहस्य...

ग्यारहमुखी रुद्राक्ष को साक्षात् रुद्र माना जाता है। यह 11 रुद्रों एवं भगवान शंकर के ग्यारहवें अवतार संकटमोचन महावीर बजरंगबली का प्रतीक है। इसे धारण करने वाले व्यक्ति को सांसारिक ऐश्वर्य और सन्तान सुख प्राप्त होता है और उसकी सारी ऊपरी बाधाएं दूर होती हैं। तेरहमुखी रुद्राक्ष साक्षात् इंद्र का स्वरूप है। यह कौटिल्य के समान समस्त प्रकार के ऐश्वर्य देता है और कामनाओं की पूर्ति करता है। इसे धारण करने से व्यक्ति सभी प्रकार की धातुओं एवं रसायनों की सिद्धि का ज्ञाता हो जाता है। प्राचीन वैदिक अनुसार अनुसूयामिनी का भी तेरहमुखी रुद्राक्ष का देवता माना गया है। पंद्रहमुखी रुद्राक्ष को भगवान पशुपतिनाथ का स्वरूप माना गया है। यह धारक के आर्थिक एवं आध्यात्मिक स्तर को उठाकर उसे सुख, संपदा, मान-सम्मान-प्रतिष्ठा एवं शांति प्रदान करता है। पंद्रहमुखी रुद्राक्ष विशेष रूप से नजर दोष और भूत बाधा से मुक्ति प्राप्त के लिए धारण किया जाता है। बीसमुखी रुद्राक्ष को जनार्दन स्वरूप कहा गया है। इसे धारण करने से भूत, पिशाच आदि का भय नहीं रहता। बीसमुखी रुद्राक्ष धारण करने से वरुण ग्रहों का अशुभ प्रभाव भी नहीं पड़ता है। इसे पहनने वाले को सर्पादि विषधारी प्राणियों का भी भय नहीं होता है।



## सबसे आसान रास्ता

एक बार एक डाकू एक संत के पास आया और बोला, महाराज! मैं अपने जीवन से परेशान हो गया हूँ। जाने कितनों को मैंने लूटकर दुःखी किया है, उनके घरों को तबाह किया है। मुझे कोई रास्ता बताइए, जिससे मैं इस बुराई से बच सकूँ। संत ने बड़े प्रेम से कहा, बुराई करना छोड़ दो, उससे बच जाओगे। डाकू ने कहा, अच्छी बात है। मैं कोशिश करूँगा। डाकू चला गया। कुछ दिनों के बाद वह फिर लौटकर आया और संत से बोला, मैंने बुराई को छोड़ने की बहुत कोशिश की, लेकिन छोड़ नहीं पाया। अपनी आदत से मैं लाचार हूँ। मुझे कोई दूसरा उपाय बताइए।

संत ने थोड़ी देर सोचा, फिर बोले, अच्छा, ऐसा करो कि तुम्हारे मन में जो भी बात उठे, उसे कर डालो, लेकिन प्रतिदिन उसे दूसरे लोगों से कह दो। संत की बात सुनकर डाकू को बहुत खुशी हुई। उसने सोचा कि इतने बड़े संत ने जो मन में आप, सो कर डालने की आज्ञा दे दी है। अब वह बेघड़क डाका डालेगा और दूसरों से कह देगा। यह बहुत ही आसान है। वह उनके चरण छूकर लौट गया। कुछ दिनों के बाद वह फिर संत के पास आया और बोला, महाराज! आपने मुझे जो उपाय बताया था, उसे मैंने बहुत आसान समझा था, लेकिन वह निकला बड़ा कठिन। बुरा काम करना जितना मुश्किल है, उससे कहीं अधिक मुश्किल है दूसरों के सामने अपनी बुराइयों को कहना। फिर थोड़ा ठहरकर वह बोला, दोनों में से अब मैंने आसान रास्ता चुना है। डाका डालना ही छोड़ दिया है।

हमारा जीवन भगवान की अद्भुत सृष्टि है। परमात्मा ने हमारे जीवन को कर्मभूमि के रूप में विकसित किया है।



## सद्विचार का लें संकल्प

हमारे जीवन की सफलता-असफलता कर्म पर ही निर्भर करती है। हमारे जीवन की जीवनी शक्ति हमारे विचारों से ही प्रभावित होती है। भगवान किसी को बुरा या अच्छा नहीं बनाता है न ही जन्मकाल में अच्छे-बुरे की पहचान करना संभव है। मनुष्य केवल अपने प्रारब्ध को लेकर आता है, लेकिन आगे चलकर वह जिन विचारों, वातावरण व परिवेश में पलता है, उसमें वैसा ही गुण निर्मित होने लगता है।

### माता-पिता का प्रभाव

संस्कारी माता-पिता के घरों में पलने वाले बच्चों पर माता-पिता का सीधा प्रभाव पड़ता है, लेकिन जो गलत संस्कार में पलते हैं, उनका जीवन दुष्प्रभावित होने लगता है, अतः हमें बचपन से ही अच्छे संस्कारों, विचारों व कार्यों के बीज अंकुरित करना।

चाहिए। सुबह का समय बड़ा महत्वपूर्ण होता है। अतः प्रातःकाल आंखें मूंदकर यह प्रार्थना करो कि, हे परमात्मा! तुम मुझमें शक्ति भरो, मरिचक, मुंह, ग्रीवा, लीवर, किडनी, हृदय आदि को शक्तिवान बनाओ। मेरी इन्द्रियों को सबल बनाओ।

### पंच तत्व शरीर को स्वस्थ रखें

पंच तत्व (पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल व आकाश) मेरे शरीर को स्वस्थ रखें। यदि तुम जीवन के प्रति उत्तम विचार रखोगे तो तुम्हारा जीवन उत्तम बनेगा और यदि नकारात्मक भाव रखोगे तो नकारात्मक हो जाएगा। शरीर की जीवनी शक्ति नकारात्मक हो जाएगी।

### शरीर विचारों से प्रभावित

हमारा शरीर अपने विचारों से ही प्रभावित होता है। जो लोग जीवन को आनंद के रूप में, ऐश्वर्य व सफलता के रूप में, संगीत के रूप में स्वीकार करते हैं, उनका जीवन आनंदमय हो जाता है। हालांकि ऐसे लोग भी हैं जो जीवन को निराशा, असफलता व विपत्ति के रूप में स्वीकारते हैं, उनका जीवन आसू बनकर बह जाता है। प्रश्न यह है कि हम अपने जीवन को आनंद के रूप में स्वीकारते हैं या दुःख के सागर के रूप में, जीवन को इससे कुछ लेना-देना नहीं है कि वह जीवन में दुःख लेकर आए या सुख लेकर। जीवन तो सीधा जीवन है, आप उसे जिस पात्र में रखेंगे, उसका स्वरूप वैसा ही हो जाएगा। जैसे गंगाजल को घड़े में रखेंगे तो वह घड़े का और लोटे में रखेंगे तो लोटे का रूप धर लेगा। इसी प्रकार आप जीवन को जिस पात्र में रखेंगे उसका स्वरूप वैसा ही हो जाएगा।

### संपूर्ण जीवन के स्वामी

जीवन को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कैसा पात्र हैं। हम एक संपूर्ण जीवन के स्वामी हैं। यदि हमारे जीवन में कोई विकृति है, कोई विकार है तो हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि अब मेरा विकार नष्ट हो रहा है, दुर्गन्ध नष्ट हो रही है। मेरे जीवन में सदगुण उदित हो रहा है। मैं स्वस्थ हो रहा हूँ। मेरी इन्द्रियाँ स्वस्थ हो रही हैं। मेरी ऊर्जा शक्ति बढ़ रही है। ऐसे विचारों को प्रतिदिन प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए और यह संकल्प लेना चाहिए कि मैं क्रियाशील रहूँगा। आलस्य का त्याग करूँगा। नशे का सेवन नहीं करूँगा। लोगों से मुस्कुराकर बात करूँगा। क्रोध पर विजय प्राप्त करूँगा। मन की सारी बुरी भावनाओं का त्याग कर दूँगा। अच्छे विचारों से प्रेरित होकर सुबह से शाम तक अपने काम को पूर्ण करूँगा। ऐसे विचारों के उदय होने से हमारे जीवन में आनंद के फूल खिलने लगेंगे।

# शुद्ध आत्माओं का मनन करें

संसार में जितने भी धर्म हैं सभी चरित्र का पाठ पढ़ाते तो हैं किंतु चरित्र की सूक्ष्मता का उतनी गंभीरता से विचार नहीं करते जितना जैन दर्शन में किया जाता है। जैन धर्म चरित्र प्रधान धर्म है। जिसमें चरित्र की ही पूज्यता है, मान्यता है। चरित्र बिना ज्ञान कागज के फूल के समान खुशबू रहित है। यही कारण है कि जैन धर्म के मूल मंत्र णमोकार मंत्र में भी किसी व्यक्ति विशेष को नमस्कार न कर उन सभी भव्य आत्माओं को नमस्कार किया है जिन्होंने अपने चरित्र की उत्कृष्टता, पवित्रता एवं उवलता के कारण परमात्मा तत्व की प्राप्ति की है अथवा वर्तमान में जो भी इस मार्ग को अपनाकर चरित्र शुद्धि के मार्ग में अग्रसर हैं, वे ही पूज्य हैं।

### आत्म तत्व की शक्ति

जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक प्राणी की अपनी स्वतंत्र सत्ता है, चाहे वह मनुष्य हो, देव नारकी अथवा पशु ही क्यों न हो। आत्मतत्व की शक्ति की अपेक्षा से सभी जीव समान हैं। चरित्र शुद्धि के मार्ग पर अग्रसर होना प्रत्येक जीव का प्रथम कर्तव्य है। चरित्र शुद्धि के मार्ग पर अग्रसर होकर ही यह जीव परमात्मा पद, सर्वोच्च पद प्राप्त कर सकता है। अपनी चरित्रिक अशुद्धियों के कारण ही यह जीव इस संसार की चौरासी लाख योनियों में निरंतर भटक रहा है। चरित्र शुद्धि जैन धर्मवलंबियों की धर्म साधना का मूल उद्देश्य होता है तथा जैनियों के जितने भी पर्व होते हैं उसमें चरित्र प्रधान होते हैं।

### धर्म के लक्षण

सत्य, संयम, तप, त्याग, ब्रह्मचर्य आदि जो हैं वे सब धर्म के लक्षण हैं। हमारी आत्मा के निज स्वभाव है। मूलतः अपनी स्वाभाविक अवस्था में आत्मा इन्हीं में रमण करती है। जिस प्रकार खुशबू को फूल से अलग नहीं किया जा सकता उसी प्रकार इन गुणों को भी आत्मा से अलग नहीं किया जा सकता।

### आत्मा के विकारी भाव

क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, मद-मत्सर, ईर्ष्या आदि के भाव हमारी आत्मा के विकारी भाव हैं जिन्हें हमें जानना है तथा इनका दृढ़तापूर्वक शमन करना है, दमन करना है। अपनी आत्मा को अपने चरित्र को उवल, पवित्र तथा

### चरित्र की शुद्धता

चरित्र शुद्धि के इस महापर्व पर श्री वीर प्रभु से यही मंगल प्रार्थना करता हूँ कि प्रत्येक मनुष्य के मन में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, वात्सल्य, भाईचारे के भाव जागृत हो, क्षमा दया के भाव हो, हम स्वयं सदा सुखी रहें और औरों को निरंतर सुखी रखने का प्रयास करें। उनके मंगल की भावना भाएँ, विश्व बंधुत्व की भावना से सदा ओत-प्रोत रहें, सुखी रहें। सब जीव जगत की भावनाओं के साथ मंगल विराम लेता हूँ।

चरित्र ही मनुष्य के जीवन की अनमोल थाती है। चरित्रविहिन मनुष्य पशु तुल्य होता है।

उत्कृष्ट बनाता है। इन्हीं भावनाओं को भाने के लिए चरित्र में लाने के लिए यह दशलक्षण महापर्व मनाया जाता है। इन दस दिनों में धर्म के स्वरूप के माध्यम से प्रत्येक श्रावक स्वयं अपनी आत्मा का अवलोकन करता है। अपनी सारी बुराइयों का चिंतन करता है तथा उन्हें दूर करने में प्रयासरत होता है, भावना भाता है, तदनुसृत संयम तथा त्याग का मार्ग अपनाता है। अपने गुरुजनों से धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा पाता है।

### बुराइयों को नजरअंदाज करें

बुराइयों क्या हैं, क्यों हैं, किस कारण से हैं, उनका स्वरूप कैसा है तथा वे कैसे-कैसे रूप बदलकर हमारे सामने उपस्थित होती हैं यह जानना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। तभी वह इन बुराइयों से बचकर सत्मार्ग अपना सकता है। बुराइयों को त्यागना तथा अच्छाइयों को अपनाना ही इस महापर्व की सार्थकता है।



## रास्ते के दीपक



हमें आध्यात्मिक और व्यावहारिक ज्ञान संतों की संगति में ही मिलता है। सत्संग हमारे कोरे और मलिन हृदयों को ज्ञानवान और पवित्र बनाने का ही एक मार्ग है। इनसे हमें कतराना नहीं चाहिए। संत ही हमारे पथ के दीपक होते हैं।

एक बार संत नामदेव जी के सत्संग में गृहस्थ शामनाथ अपने पुत्र तात्या को लेकर आए। शामनाथ पक्के धार्मिक और सत्संगी थे, जबकि उनका पुत्र धर्म-कर्म और साधु-संतों की संगत से भी दूर भागता था। संत नामदेव को शीश नवाते हुए शामनाथ ने कहा, महाराज, यह मेरा पुत्र तात्या है। सारा दिन कामचोरी और आवारागर्दी में व्यतीत करता है। सत्संग के नाम से भी बिदकता है। कृपया इसका मार्गदर्शन कीजिए। शायद आपके समझाने से इसे कुछ ज्ञान हो जाए। शाम हो चली थी। नामदेव दोनों को मंदिर के पीछे लंबी-चौड़ी दालान में ले गए। वहां एक कोने में एक लालटेन जल रही थी, मगर संत उन दोनों को लालटेन के दूर दूसरे अंधेरे कोने में ले गए तो तात्या बोल उठा, महाराज, यहां अंधेरे में क्यों बैठते हैं। वहां लालटेन के पास चलिए ना। वहां हमें लालटेन का उचित प्रकाश भी मिलेगा। हम एक-दूसरे को देख तो सकेंगे। यह सुनकर नामदेव जी मुस्कुराए और बोले, पुत्र, तुम्हारे पिता भी तुम्हें दिन-रात यही समझाने में लगे रहते हैं। हमें प्रकाश तो लालटेन के पास जाने से ही मिलता है। मगर हम अंधकार में ही हाथ-पैर मारते रह जाते हैं। ठीक इसी प्रकार हमें आध्यात्मिक और व्यावहारिक ज्ञान भी संतों की संगति में ही मिलता है। सत्संग हमारे कोरे और मलिन हृदयों को ज्ञानवान और पवित्र बनाने का ही एक मार्ग है। इनसे हमें कतराना नहीं चाहिए। संत ही हमारे पथ के दीपक होते हैं। सटीक व सहज भाव से दिए गए ज्ञान ने तात्या की आत्मा को भी प्रकाशवान कर दिया।

## संपादकीय

## लगता है मुझे ऐसा कि....

कहते हैं कि भर जाए पेट दिल नहीं भरता, स्वाद लोलुप हो और चरता, स्वास्थ्य को ये नहीं जमता फिर चाहेजो भी हो उसकी या धन, तनभी मन भी उसका पर परिमाण नहीं मन चाहता। वैभव का अट्ट अंबार मिला था। सिकन्दर को दुनिया पर हुकूमत करने का चांस मिला था। चाहे फिर भी बाकी है गरीबी को निशानी क्योंकि वो तो पानी से भरा प्यासा ऐसा कुआँ है। ठीक इसी तरह लगता है मुझे ऐसा कि सचमुच मनुष्य सारा छल-कपट और झूठ का जाल उस भविष्य के लिए बुनता है जिस भविष्य को वह खुद लेश मात्र भी नहीं जानता है। वर्तमान में जीना जीवन की एक बड़ी कला है, समय प्रबंधन का यह एक अति उत्तम सिलसिला है। अतीत की स्मृतियों में भटकते रहने से बताओ क्या मिलेगा? वर्तमान यदि अच्छा होगा तो भविष्य भी अच्छे से परिणाम देगा। जो वर्तमान के हर पल हर क्षण का सही उपयोग करता है, उसका वर्तमान तो आनंदप्रद बनता ही है और भविष्य भी अनेकानेक नई निष्पत्तियों के भंडार भरता है। हममें सिर्फ संग्रह की प्रवृत्ति भी न पनपे अति मात्रा में। अति हर चीज की बुरी होती है। हम हर परिस्थिति को पचाना सीखें। हमें परिस्थिति का सामना करना आना चाहिए। जीवन में परिस्थिति कैसी भी हों, हमें उत्थान की राह ही चुननी होगी। कहते भी हैं कि परिस्थितियों का दास नहीं बनना चाहिए, बल्कि उन्हें अपने अनुकूल ढालना चाहिए। इसलिए भोजन हो या भाजन, निंदा हो या प्रशंसा, हर बात अर्जन के साथ विसर्जन की जुड़ी होनी चाहिए।



प्रदीप चजेड़ (बोरावड़)

### आज का राशिफल

**शेभ** प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा में अपने सामान के प्रति सचेत रहें, चोरी या खोने की आशंका है।

**वृषभ** व्यावसायिक योजना को बल मिलेगा। राजनैतिक दिशा में किए गए प्रयास सफल होंगे। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। निजी संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी। प्रणय संबंध मधुर होंगे। ईश्वर के प्रति आस्था बढ़ेगी।

**मिथुन** जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आय और व्यय में संतुलन बना कर रहें। किसी अभिन्न मित्र से मिलाप की संभावना है। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। खान-पान में संयम रहें। संतान के संबंध में चिंतित रहेंगे।

**कर्क** प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कुटुम्बजनों का सहयोग मिलेगा। धन हानि के योग हैं।

**सिंह** जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। क्रोध व भावुकता में लिया गया निर्णय कठकारी होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी।

**कन्या** आर्थिक योजना फलीभूत होगी। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। वाणी की सौम्यता बनाये रखें। नए अनुबंध प्राप्त होंगे। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। व्यर्थ की भाग्यदोष रहेंगे।

**तुला** पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। रूपरूप से कलन देन में सावधानी अपेक्षित है। स्थानान्तरण व परिवर्तन की दिशा में सफलता मिलेगी। कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा।

**वृश्चिक** शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। धन, सम्मान, यश, कौशल में वृद्धि होगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। वाणी की सौम्यता से व्यावसायिक प्रयास फलीभूत होंगे। नए अनुबंध प्राप्त होंगे।

**धनु** व्यावसायिक व पारिवारिक समस्याएं रहेंगी। पिता या उच्चधिकारी का सहयोग मिलेगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। यात्रा में अपने सामान के प्रति सचेत रहें चोरी या खोने की आशंका है।

**मकर** शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। पारिवारिक जनों का सहयोग मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे। मनोरंजन के भरपूर अवसर प्राप्त होंगे। धन लाभ के योग हैं।

**कुम्भ** पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। किसी का वाणी के स्तर पर उल्टाइन न करें। कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा।

**मीन** जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के योग हैं। धन, सम्मान, यश, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है।

## स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई के उपयोग की चुनौतियां

दिनेश सी. शर्मा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टूल्स जैसे कि चैटजीपीटी तमाम क्षेत्रों में लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं, अब तो चिकित्सकों, मरीजों और स्वास्थ्य देखभाल एजेंसियों ने भी उपयोग शुरू कर दिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एआई की नैतिक उत्तरदायित्व एवं परिचालन विधि को लेकर नए परामर्श प्रपत्र में चेतावनी युक्त संदेश जारी किया है, विशेषकर स्वास्थ्य क्षेत्र में लार्ज मॉडल-मॉडल मॉडल्स (एलएमएम) के इस्तेमाल पर। एलएमएम, जैसे कि चैटजीपीटी और बार्ड, टेक्स्ट और वीडियो जैसे इनपुट डाटा को स्वीकर कर सकता है और जो आउटपुट यह पैदा करता है मात्र इंटपुट डाटा तक सीमित नहीं है। ये व्यवस्थाएं मानवीय सक्षमता की नकल करने के लिए डिजाइन की गई हैं, यहां तक कि ऐसे कार्य करने में समर्थ हैं, जिनके लिए इनमें लर्निंग और एडैप्टिंग प्रोग्राम फीड न भी किए गए हों। इसलिए इनसे स्वास्थ्य से संबंधित मिथ्या, त्रुटिपूर्ण, पक्षपाती या अपूर्ण सूचनाएं आने का गंभीर जोखिम दरपेश है। यह भी अर्थ है कि एआई द्वारा दवाइयों को इस तरह 'सिखाया' जा सकता है कि लैंगिक, जाति, नस्ल आदि से संबंधित असत्य, तोड़ा-मरोड़ा डाटा घड़कर यह हानिकारक या पक्षपाती सामग्री पैदा कर सके। एआई का उपयोग बढ़ने के साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2021 में मोटे तौर पर सामान्य दिशा-निर्देशक सिद्धांत जारी किए थे, जोकि स्वास्थ्य क्षेत्र में इस नई तकनीक के इस्तेमाल की संभावना को मान्यता थी। इन सिद्धांतों के मूलाधिक, एआई तकनीक के लिए अनिवार्य था कि वह संप्रभुता की सुरक्षा, मानव भलाई को बढ़ावा, मानव सुरक्षा, जनहित को प्रोत्साहित करे, साथ ही पारदर्शी, व्याख्यात्मक हो एवं सुबोधता सुनिश्चित करती हो, उत्तरदायी और जिम्मेवाराना हो, सबका साथ और समानता सुनिश्चित करने वाली हो, उन तकनीकों को बढ़ावा दे जो प्रतिक्रियाशील और सतत हों। व्याख्यात्मक का अर्थ है कि पब्लिक डोमेन में एआई के डिजाइन या डिलॉयमेंट को लेकर समुचित जानकारी उपलब्ध कराई जाए। पिछले हफ्ते जारी नए दिशा-निर्देश स्वास्थ्य क्षेत्र में एलएमएम के विकास और अपनाए जाने से संबंधित हैं। एलएमएम का उपयोग समझने के लिए, किसी एआई तकनीक की वैल्यू-चेन (मूल्य-शृंखला) को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। इस शृंखला के किसी भी चरण पर, अहम निर्णय लेने पड़ेंगे, जो इस तकनीक की भावी

दिशा और परिणामों पर असर डाल सकते हैं। शृंखला का आरंभ एलएमएम टूल को विकसित करने से होता है। विकसित करने वालों में, कोई एक बड़ी तकनीकी कंपनी, कोई युनिवर्सिटी या एक तकनीकी नव-उद्यम या राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली या सार्वजनिक-निजी भागीदार उद्यम हो सकता है। तथ्यतः, एक प्रदाता, जो कोई तीसरा पक्ष भी हो सकता है, वह एलएमएम में आगे सुक्ष्म सुधार और इसको प्रशिक्षित करके एक प्रोग्रामिंग इंटरफेस पेश कर सकता है। बृहद सॉफ्टवेयर के साथ एलएमएम का एकीकरण करने की जिम्मेवारी प्रदाता की है ताकि यह एक एप्लीकेशन बन सके। चेन में तीसरा मुख्य खिलाड़ी डेवलॉपर है, जो अंतिम छेपर पर, उपयोगकर्ता को यह सेवा उपलब्ध करवाता है। स्वास्थ्य क्षेत्र में, प्रदाता कोई एक अस्पताल शृंखला, सरकारी स्वास्थ्य एजेंसी या फ्रि द्या कंपनी भी हो सकती है। इस वैल्यू चेन के प्रत्येक चरण पर इलेक्ट्रॉनिक, प्रोवाइडर और डेवलॉपर इकट्ठे अलावा बहु-नैतिकता एवं प्रशासनिक मुद्दों की भूमिका है। अधिकारिता, डेवलपर एक बड़ी तकनीकी कंपनी होगी क्योंकि एलएमएम विकसित करने को जरूरी पर्याप्त कम्प्यूटिंग पॉवर, तकनीकी कौशल और धन उसके पास होगा। लेकिन, एलएमएम अपने एल्गोरिदम में एंथ्रोपिक एलिमेंट को प्रोत्साहित करेगा, जो एलएमएम के इस्तेमाल को अपारदर्शिता बनाकर बड़ी तकनीकी कंपनियों के दबदबे को और मजबूती दे सकता है। पारदर्शिता को लेकर कॉर्पोरेट में प्रतिबद्धता नदारद होना एक मुख्य चिंता है। नियामक और विधिक प्राधिकरण को एआई टूल्स द्वारा मौजूद विधिक एवं नियामक तंत्र में दिए दिशा-निर्देशों, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दायित्व और राष्ट्रीय डाटा सुरक्षा कानून के प्रावधानों के अनुपालन को लेकर चिंता है। एलएमएम की घोषणा के समय सरकार एवं नियामक एजेंसियां सक्रिय रूप से वयोक्ति उनके पास इसको लेकर कोई नियम मौजूद नहीं थे। उदाहरणार्थ, यूरोपियन यूनियन को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कानून की पुनर्समीक्षा के आखिरी पड़ाव पर एलएमएम को शामिल करने के लिए पुनः नए प्रावधान जोड़ने पड़े। वैल्यू चेन में एलएमएम के प्रशिक्षण के लिए जिस ढंग से डाटा एकत्रण या प्रबंधन और प्रसंस्करण चल रहा है, विश्व स्वास्थ्य संगठन के



अनुसार हो सकता है यह एल्गोरिदम विधिक एवं नियामक तंत्र की पालना न करे। जैसा कि अध्ययनों में पाया गया है, एलएमएम में फ्रॉड प्रतिक्रिया देने की संभावना खुली है और नियमों में बदोतीरी की वजह से पहले से खराब हैं। आगे की राह एआई टूल्स और एलएमएम का उपयोग बंद करने में नहीं बल्कि इन्हें पारदर्शिता से विकसित करने और इनके उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने में है। आरंभ के लिए, सरकार को स्वास्थ्य सेवा या दवा क्षेत्र को लेकर विकसित किए जाने वाली एमएलएम की अंदरूनी जानकारी तक पहुंच और अनुमति देने के लिए एक नियामक एजेंसी बनानी चाहिए। इसके साथ ही, कम्प्यूटिंग पॉवर एवं पब्लिक डाटासेट्स के समावेश वाला गैर-मुनाफा अथवा सार्वजनिक तंत्र विकसित करने का प्रयास हो, जिस तक सार्वजनिक, निजी और गैर मुनाफा टूल विकसित करने वालों की पहुंच हो। स्वास्थ्य सेवाओं और उत्पादों पर लागू होने वाले तमाम नैतिक और मानवाधिकार मानकों को विस्तार देते हुए एआई तकनीक एवं टूल्स पर भी लागू किया जाए। जहां कहीं स्वास्थ्य क्षेत्र और मेडिकल एप्लीकेशंस में एलएमएम का इस्तेमाल बढ़े पैमाने पर हो, वहां जारी किए जाने उधारित इनकी लेखा-परीक्षा और प्रभाव का आकलन स्वतंत्र तीसरे पक्ष द्वारा करवाना अनिवार्य बनाया जाए। लिहाजा, न तो एआई के फायदों को बढ़ा-चढ़ाकर देखा जाए न ही इससे जुड़े जोखिमों को घटाकर पेश किया जाए।

लेखक विज्ञान संबंधी विषयों के माहिर हैं।

## पेट्टीएम पर हाथ कैसे डालेगी ईडी ?

लेखक राकेश अवाल

भारत में 14 साल पहले दबे पांव आयी ई-कामर्स कम्पनी पेट्टीएम के पांव जमाने के लिए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को ही अपना ब्रांड एम्बेस्डर बना लिया था, आज यही कम्पनी अरबों रुपये के सन्दिध लेनदेन के आरोपों से घिरी है और भारतीय रिजर्व बैंक ने इस पेट्टीएम पेट्टी बैंक के ऊपर रोक लगाने के आदेश जारी कर दिए हैं। 29 फरवरी के बाद इस कम्पनी की अनेक सेवाएं बंद कर दी जाएंगी। मनी लाँड्रिंग कि आरोपों से घिरे पेट्टीएम पर ईडी हाथ डालने को राजी नहीं है। पेट्टीएम भारत में आ तो गयी थी कांग्रेस के जमाने में ही लेकिन उसके ब्रांड एम्बेस्डर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बने 2016 में। मोदी जी की तस्वीरों के साथ जब इस कम्पनी के एक-एक पृष्ठ के विज्ञापन देश के हर बड़े अखबार और टीवी चैनलों पर दिखाए गए तो देश की जनता ने इस कम्पनी पर भरोसा कर इसे हाथों-हाथ लिया। लेकिन अंततोगत्वा भारतीय रिजर्व बैंक ने इस कम्पनी द्वारा किये जा रहे अरबों-खरबों रुपये के सन्दिध लेनदेन को पकड़ा तो इस कम्पनी पर प्रतिबंध लगा दिया गया। कम्पनी के अधोषित संरक्षक या ब्रांड एम्बेस्डर मोदी जी भी इस कार्रवाई को रोक नहीं सके। हालांकि बाद में सरकार ने साफ किया की प्रधानमंत्री के फोटो के पेट्टीएम ने गलत इस्तेमाल किया और इसके लिए उसने बाद में माफी भी मांग ली थी, क्योंकि सरकार ने उसके ऊपर जुर्माना लगा दिया था। मोदी जी के साथ पेट्टीएम के सीईओ विजय शर्मा की नजदीकियां जगजाहिर हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने कहा है कि पेट्टीएम ने नियमों का उल्लंघन किया है, इसलिए ये फ्रीसला लिया गया है। बैंक के इस एतान के बाद से पेट्टीएम

के शेयरों में भारी गिरावट आई। पेट्टीएम के शेयर 20 फ्रीसदी तक गिर गए। पेट्टीएम के शेयर का दाम 609 रुपये तक पहुंच गया है, जो बीते छह सप्ताह में सबसे कम कीमत है। आपको बता दें कि पेट्टीएम के पास डिजिटल पेमेंट बाजार का 16-17 फ्रीसदी हिस्सा है और जानकारों के मुताबिक करोड़ों लोग इससे प्रभावित होने जा रहे हैं। देश में भाजपा की सरकार बनते ही पेट्टीएम की किस्मत अचानक जागी क्योंकि कम्पनी ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इसका ब्रांड एम्बेस्डर बना लिया था। उनकी तस्वीरों वाले विज्ञापन जब अखबारों और दुसरे माध्यमों में आये तो देश की जनता ने इस कम्पनी को हाथोहाथ लेना शुरू किया। 2014 में, कंपनी ने 40 लाख से अधिक भारत की सबसे बड़ी मोबाइल भुगतान सेवा मंच पेट्टीएम वॉलेट का शुभारंभ किया। यह सेवा उबेर, बुक माय शो और मेक माय ट्रिप जैसे इन्टरनेट कंपनियों के पार भुगतान का पर्सदीदा तरीका बन गया। तीन साल बाद ही 2017 में पेट्टीएम ने पेट्टीएम पेट्टी बैंक लिमिटेड (PPBL) नाम का नया बैंक शुरू किया। इसके अंतर्गत अब सभी पेट्टीएम वॉलेट को पेट्टीएम बैंक में तब्दील कर दिया गया लेकिन इस शर्त कि साथ की सभी खता धारकों का केवायसी द्वारा सत्यापन कराया जाएगा। आज की तारीख में भारत में पेट्टीएम प्रोपेड मोबाइल, डीटीएच, डाटाकार्ड रिचार्ज, पोस्टपेड मोबाइल, लैंडलाइन, और डाटाकार्ड बिल भुगतान के लिए सभी राज्यों में सभी मोबाइल ऑपरेटोरों के साथ काम करता है। इससे कई राष्ट्रीय बैंक के क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, और नेटबैंकिंग भुगतान के साथ भागीदारी की है। पेट्टीएम उपयोगिता बिल भुगतान के लिए विभिन्न कंपनियों के साथ काम करता है। यदि आपको पेट्टीएम बैंक के खिलाफ क्लररवत हो तो आपको याद होगा कि भारत

में नोटबंदी के बाद पेट्टीएम करो एक बेहद आकर्षक मुहवार बन गया था और इसका श्रेय पेट्टीएम कंपनी के संस्थापक विजय शंकर शर्मा को जाता है। एक सुरीली आवाज में ये स्लोगन जब बजता था उसके फोन्न बाद प्रधानमंत्री की तस्वीर भी स्क्रीन पर उभरती थी। कहते हैं कि विजय ऐसा नारा देना चाहते थे जो उनकी कंपनी को गुगल और जेरोक्स की तरह ब्रैंड बना सके क्योंकि सर्व इंजन या फोटोकॉपी के लिए इन कंपनियों के नाम इस्तेमाल होते हैं। विजय शर्मा पेट्टीएम को ई-वॉलेट लेन-देन का पर्याय बनाया चाहते थे। लेकिन हाल में डाटा असुरक्षित होने के आरोपों के बाद कंपनी पर कई सवाल खड़े हुए हैं। हाल ई में एक मीडिया कंपनी ने एफ रिटिंग ऑपरेशन किया है जिसमें पेट्टीएम के उपाध्यक्ष और विजय शंकर शर्मा के भाई अजय शंकर शर्मा कथित तौर पर आरएसएस से नजदीकी की बात कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा देश में प्लास्टिक करेसी को प्रोत्साहित करने कि लिए शुरू किये गए अभियान का पूरा लाभ पेट्टीएम को मिला। पेट्टीएम एप भी बनाया गया है जो आज के सभी स्मार्टफोन ऑपरेटिंग सिस्टम एंड्रॉइड, एप्पल, और विंडोज पर काम करता है। इसमें हम बहुत सारे कैशलेस लेनदेन कर सकते हैं। इस एप के माध्यम से शॉपिंग, ट्रेन और हवाई जहाज के टिकट बुकिंग, मोबाइल और डिशा रिचार्ज, फिल्मों का टिकट भी खरीदने की आदत लोगों को पड़ गयी है। लेकिन अब सब फागलत में पेट्टीएम दिखाई दे रहा है। पिछले छह सालों में पेट्टीएम के 12.5 करोड़ उपयोगकर्ता थे। हालांकि, इसको छेड़ी दुकानों और व्यापारियों के साथ जोड़ भी दिया गया लेकिन फिर भी लेनदेन की संख्या काफी कम रही। रिजर्व बैंक ने अपने बयान कहा कि पेट्टीएम पेट्टी बैंक के खिलाफ कार्रवाई बैंकिंग विनियमन

अधिनियम, 1949 की धारा 35 के तहत की है रिजर्व बैंक ने कहा कि उसने मार्च 2022 में पेट्टीएम पेमेंट बैंक से नए कस्टमर्स जोड़ना बंद करने को कहा था। संतोष की बात ये है कि फिलहाल, आपके पेट्टीएम वॉलेट और पेट्टीएम पेमेंट बैंक खाते में मौजूद पैसा सुरक्षित है। आप 29 फरवरी, 2024 तक इनका इस्तेमाल कर सकते हैं। 29 फरवरी के बाद आप अपना पैसा बिना किसी शुल्क के अपने बैंक खाते में ट्रांसफर कर सकते हैं। आप अपना पैसा पेट्टीएम सर्वेट स्टोरस पर खर्च कर सकते हैं जो पेट्टीएम वयुआर कोड स्वीकार करते हैं। बताया गया है कि पेट्टीएम पूरी तरह बंद नहीं हो रहा है। यह भुगतान गेटवे के रूप में काम करना जारी रखेगा, अर्थात आप क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और नेट बैंकिंग का उपयोग करके भुगतान कर सकते हैं। तथापि, आप पेट्टीएम वॉलेट में नया पैसा नहीं जोड़ पाएंगे और फंड ट्रांसफर जैसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं होंगी। सूत्रों के अनुसार पेट्टीएम पेमेंट बैंक लिमिटेड (पीपीबीएल) के पास लाखों गैर-केवाईसी अनुपालन वाले खाते थे और हजारों मामलों में कई खाते खोलने के लिए एक ही पेन का उपयोग किया गया था। सूत्रों ने कहा कि ऐसे उदाहरण हैं, जहां लेनदेन का कुल मूल्य करोड़ों रुपये में है, जिससे धन शोधन को चिंताएं बढ़ रही हैं। आरबीआई और लेखा परीक्षकों दोनों द्वारा आयोजित सत्यापन प्रक्रियाओं के दौरान ये पेट्टीएम बैंक ने अपने बयान कहा कि पेट्टीएम पेट्टी बैंक के खिलाफ कार्रवाई बैंकिंग विनियमन

### विचारमंच

## सम्पूर्ण जीर्णोद्धार की राह पर कांग्रेस

(लेखक - तनवीर जाफरी)

स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाने वाली कांग्रेस पार्टी इन दिनों एक साथ कई मोर्चों पर संघर्षरत है। सत्ता का विपक्ष के प्रति दुश्मनों जैसा व्यवहार जहाँ कांग्रेस व कांग्रेस नेताओं के लिये चुनौती बना हुआ है वहीं कांग्रेस अपनी पार्टी में ही पल रहे आरतनी के साँपों से भी जुझ रही है। अनेक अवसरवादी नेता समय समय पर किसी न किसी बहाने से न केवल कांग्रेस छोड़कर बल्कि कांग्रेस की राजनैतिक विचारधारा को भी त्याग कर धर्मनिरपेक्ष भारत के निर्माण में अपना योगदान देने के बजाय साम्यवादीकता की कुड़बुनी पीटने में लगे हैं। अनेक भ्रष्ट कांग्रेसी नेता भी पार्टी छोड़कर भवशय सत्ता की

आगोश में जा बैठे हैं और किसी जांच एजेंसी का सामना करने के बजाये सुविधापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इतना ही नहीं बल्कि नवगठित I. N. D. I. A गठबंधन के कई क्षेत्रीय घटक दल भी सीट शेयरिंग को लेकर कांग्रेस को कमतर आंकने की कोशिश कर रहे हैं। गोया ऐसे वक्त में जबकि I. N. D. I. A गठबंधन को एकजुट व मजबूत होने का सन्देश देना चाहिये ऐसे वक्त में कई विपक्षी क्षेत्रीय दल भी कांग्रेस का ही हाँसला परत करने में लगे हैं। उपर इन्हीं विषम परिस्थितियों में राहुल गांधी मणिपुर से मुंबई तक की एक कतार आंकने की कोशिश कर रहे हैं। जोड़ो न्याय यात्रा पर निकल चुके हैं। इस यात्रा की शुरुआत में ही I. N. D.

I. A गठबंधन के प्रारंभिक सूत्रधार बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने साथ खेला हो गया और वे अपने पुराने केंचुल में जा बसे। असम में न्याय यात्रा को राज्य सरकार का कदम कदम पर तरह तरह का विरोध सहना पड़ा। कहीं कहीं के इजाजत नहीं मिली तो कहीं पुलिस में राहुल के विरुद्ध एफ आई आर दर्ज हुई। यहाँ तक कि बंगाल में जहाँ भारत जोड़ो न्याय यात्रा को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का सहयोग व समर्थन मिलना चाहिये वहाँ भी वीरभूमि और मुर्शिदाबाद जैसे जिलों में परीक्षा के बहाने यात्रा की अनुमति नहीं दी गयी। सीट शेयरिंग के नाम पर भी ममता बनर्जी अपना स्टैंड लगभग साफ कर चुकी हैं कि वे बंगाल की

सभी 42 लोकसभा सीटों पर अकेले ही चुनाव लड़ेंगी। इसके पहले ममता ने कांग्रेस को मात्र दो सीटें देने का प्रस्ताव किया था जो कांग्रेस ने नामंजूर कर दिया है। इतना ही नहीं बल्कि ममता ही यह भी कह चुकी हैं कि कांग्रेस यदि 300 सीटों पर लोकसभा चुनाव लड़ती है तो इनमें से 40 सीटें भी नहीं जीत सकती। उत्तरप्रदेश में भी कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी से 20 सीटें मांगी थी। परन्तु अखिलेश यादव ने कांग्रेस को केवल 11 सीटें देने की ही घोषणा की। अब खबर है कि कांग्रेस व सपा में 13 सीटों पर सहमति बन चुकी है। इसी तरह दिल्ली में तो आम आदमी पार्टी के साथ कांग्रेस की सीट शेयरिंग की खबर है जिसके अनुसार कांग्रेस 4

पर जबकि आम आदमी पार्टी 3 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। परन्तु संभवतः पंजाब में इन्हीं दोनों दलों में सीट शेयरिंग न हो सके और दोनों दल आमने सामने चुनाव लड़ें। आम आदमी पार्टी तो हरियाणा, असम, गुजरात और गोवा में भी कांग्रेस से सीटें मांग रही है। परन्तु इन सबसे इतर असम हो या बंगाल या बिहार अथवा झारखण्ड जहाँ से भी राहुल गाँधी के नेतृत्व में भारत जोड़ो न्याय यात्रा गुजर रही है लगभग हर जगह कांग्रेस पार्टी को भारी जनसमर्थन हासिल हो रहा है। कहीं कहीं तो जनसभाओं में लाखों की भीड़ इकट्ठी होकर राहुल गाँधी व कांग्रेस नेताओं की बातों को सुन रही है। परन्तु चाटुकार गोदी मीडिया ने राहुल गाँधी के नेतृत्व

में चल रही इस भारत जोड़ो न्याय यात्रा को पूरी तरह ब्लैक आउट कर रखा है। गोदी मीडिया को इंडिया गठबंधन में किसी तरह की मनुमुटाव की खबरों को तो मिरव मसाला लगाकर परोसने में खूब मजा आता है परन्तु उसे राहुल गाँधी के नेतृत्व में चल रही भारत जोड़ो न्याय यात्रा में उमड़ती भीड़ व उसकी सफलता नजर नहीं आती। इससे पहले ही जब राहुल ने 7 सितम्बर 2022 को कन्याकुमारी से कश्मीर के लिये यात्रा निकली थी तब भी गोदी मीडिया ने कोई तवज्जोह नहीं दिया था। I. N. D. I. A गठबंधन में अनेक सहयोगी दलों के नखरे,सत्ता का दबाव और साथ ही कांग्रेसी विभीषणों का सामना और इसी बीच भारत जोड़ो

न्याय यात्रा के दौरान ही राहुल गाँधी का कांग्रेस द्वारा अपनाए गए सिद्धांतों की रक्षा करने की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुये यह कहना कि- मैं चाहता हूँ कि हिमंत बिस्वा सरमा और मिलिंद देवड़ा जैसे लोग कांग्रेस से चले जाएं, मैं इससे गाँधी के नेतृत्व में चल रही भारत जोड़ो प्रकार की राजनीति का प्रतिनिधित्व करते हैं, यह कांग्रेस पार्टी की राजनीति नहीं है। लिहाजा ऐसे नेताओं को पार्टी से अलग हो जाना चाहिए, क्योंकि वे इसकी विचारधारा से सहमत नहीं हैं। तमाम नेताओं द्वारा कांगं्रेस पार्टी छोड़कर जाने के दौरान ही राहुल का अवसरवादियों को दिया जाने वाला सध सन्देश अत्यंत महत्वपूर्ण है।

# जवां रहें हमेशा

जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, महिलाओं की युवा दिखने की इच्छा भी उसी रफ्तार से बढ़ने लगती है। वे तीस की उम्र में बीस की दिखना चाहती हैं, चालीस की उम्र में तीस की और पचास की उम्र में चालीस की। क्या सचमुच ये संभव है? और वे कौन-सी चीजें हैं जो महिलाओं को उम्र दर उम्र युवा बनाए रख सकती हैं?

अगर हम कपड़ों में भड़कीले रंगों का प्रयोग कर सकते हैं तो मेकअप में क्यों नहीं! अगर सही तरीका मालूम हो तो प्रयोग करने में कोई गुरेज नहीं है। इस सीजन में नियॉन मेकअप में आई शेडोज और होंठों के लिए हॉट पिंक, पीच या नारंगी रंग का खुलकर इस्तेमाल कर सकती हैं।



## बढ़ता फ्रेज नियॉन मेकअप का

आई शेडोज में लाइम ग्रीन, फिरोजा और कलर्ड लाइनर के साथ प्रयोग आसानी से किया जा सकता है। सही तरीका हमेशा त्वचा की रंगत को ध्यान में रखकर रंगों का चयन करें। गोरी रंगत पर कोई नियॉन शेड फबता है और इसका बखूबी प्रयोग किया जा सकता है। जबकि गेहुए और सांवली रंगत पर वॉर्म टोन जैसे ऑरेंज-पीच ब्लश चलते हैं। गहरी रंगत पर चटख शेड के लिए कलर्स मसलन शॉकिंग पिंक बहुत अच्छे लगते हैं।

- कोई भी मेकअप करने से पहले त्वचा को नमी पहुंचाना जरूरी है। मॉयस्चराइजर लगाने के बाद प्राइमर लगाएं। इसके फाउंडेशन लगाने के बाद त्वचा चमकदार दिखती है।
- इसके बाद दम-धबों को छिपाने के लिए कंसिलर लगाएं। त्वचा की रंगत से एक शेड गहरा फाउंडेशन का हलका टच दें।
- इस बात का ध्यान रखें कि अगर आंखों पर ब्लैक आई शेडो का इस्तेमाल कर रही हैं तो होंठों और गाल (चीक्स) के मेकअप के लिए मीडियम शेड चुनें।
- अगर आई शेडो भूरे या बेज रंग का है तो होंठों पर कोरल शेड की लिपस्टिक लगाएं।
- नियॉन मेकअप के साथ सफेद, काले, बेज और सलेटी रंग के परिधान जंचते हैं।
- इस मेकअप के साथ हेयरस्टाइल में ट्रेंडी ब्रेड, साइड ब्रेडिंग या साइड पोनीटेल बहुत अच्छी लगती है।

सही ड्रेस का चुनाव जितना महत्वपूर्ण है उतना ही खास है कलर सिलेक्शन। फैशन की दुनिया में कलर्स की भी बहुत ज्यादा अहमियत होती है। कलर की बात हो तो सबसे ज्यादा ग्लैमरस और ब्यूटीफुल है ब्लैक...परफेक्ट ड्रेस वह है जो दिखने में आकर्षक, पहनने में कम्फर्टबल, स्टाइलिश और फैशन के अनुसार हो और साथ ही आप में कॉन्फिडेंस भी जगाती हो। आपकी ड्रेसिंग सैस आपकी इमेज को भी जाहिर करती है।



## ग्लैमरस और ब्यूटीफुल है ब्लैक

हमें हमेशा यही कन्स्यूजन बना रहता है कि कौन-सा कलर और ड्रेस पहनें कि हर तरह बस हम ही छा जाएं और सभी सिर्फ हमारे ही ड्रेसिंग सैस की तारीफ करें। सही ड्रेस का चुनाव जितना महत्वपूर्ण है उतना ही खास है कलर सिलेक्शन। फैशन की दुनिया में कलर्स की भी बहुत ज्यादा अहमियत होती है। कलर की बात हो तो सबसे ज्यादा ग्लैमरस और ब्यूटीफुल है ब्लैक...परफेक्ट ड्रेस वह है जो दिखने में आकर्षक, पहनने में कम्फर्टबल, स्टाइलिश और

फैशन के अनुसार हो और साथ ही आप में कॉन्फिडेंस भी जगाती हो। आपकी ड्रेसिंग सैस आपकी इमेज को भी जाहिर करती है। आपके ड्रेसिंग स्टाइल से ही आपके टेस्ट और सोच के बारे में लोग अनुमान लगाते हैं। कोई भी शख्स आपके पहनावे से ही आपका पहला इम्प्रेसन लेता है। आप अगर लोगों को अपनी ड्रेसिंग सैस का कायाल बनाना चाहती हैं तो उन्हें इम्प्रेस करने के लिए सही ड्रेस और स्टाइल का चुनाव करना बेहद जरूरी है। चाहे कॉलेज गॉइंग हो या वर्किंग वूमन, सभी स्मार्ट और प्रेजेंटबल दिखना चाहती हैं। इसके लिए आपको महंगे ब्रांडेड कपड़ों के पीछे दौड़ने की जरूरत नहीं है, आप वही खरीदें, जो ट्रेंड में चल रहा हो और आप पर जंचे। कम खर्च में आप अच्छी लगे तो क्या कहना। फैशन और ट्रेंड का जिऊ आते ही जो पहला कलर जेहन में आता है वह है ब्लैक। सीजन कोई भी हो, फैशन के चाहवानों की चाहत ब्लैक के लिए कभी कम नहीं होती है। फैशनपरस्त लोगों की पहली पसंद इन दिनों ब्लैक कलर की ड्रेस बन चुकी है। ब्लैक कलर हॉट फैशन स्टेटमेंट बन चुका है। शादी, रिसेप्शन, डंस पार्टी, कॉन्कटेल पार्टी, बर्थडे पार्टी या फिर कोई फेमिली फंक्शन हो, सभी जगह ब्लैक का ही जादू छा रहा है। ब्लैक ऐसा कलर है जो फॉर्मल और कैजुअल दोनों मौकों पर पहना जा सकता है। ब्लैक की खासियत है कि ट्रेंड और स्टाइल भले ही वेंज हो जाएं पर ब्लैक कभी आउटडेटेड नहीं होता। जिन लड़कियों का रंग गोरा है, वे तो ब्लैक में और भी कयादा खूबसूरत दिखती हैं। ब्लैक कलर पहनने से दुबले दिखाई देते हैं, क्योंकि डार्क कलर पर लाइट रिफ्लेक्शन होता है इसलिए भी ब्लैक कलर का क्रेज सभी ऐज ग्रुप्स में सबसे ज्यादा देखने को मिलता है।

### पार्टी वियर

आप को कभी भी अचानक किसी पार्टी में जाना पड़ सकता है इसलिए आप अपनी वॉर्डरॉब में एक ब्लैक कलर का ड्रेस जरूर रखें। पार्टी वियर में तो ज्यादातर लोग ब्लैक कलर ही पसंद करते हैं। ब्लैक ग्लैमरस पार्टी कलर है इसलिए यह कलर किसी भी पार्टी में जाने के लिए फिट है। अगर आप नाइट लाइफ पर्सन हैं तो ब्लैक कलर आपके लिए बेस्ट है। यह आप पर सबसे ज्यादा सुट करेगा। वैसे तो ब्लैक ड्रेस में ही आप ग्लैमरस दिख सकती

हैं लेकिन अगर आप ज्यादा हॉट सेक्सवी लुक चाहती हैं तो स्लेश और फॉल नेक को हाफ कट स्कर्ट के साथ पहन सकती हैं। ब्लैक में आप अगर इंडियन ड्रेस पहनना चाहती हैं तो वर्क वाली साड़ियों और डिजाइनर सूट्स एवं कुर्तियों की मार्केट में खूब भरमार है। अगर आप रिलम हैं तो ब्लैक शॉर्ट आऊटफिट पहन कर आप बन जाएंगी सेक्सवी बंब।

### प्रोफेशनल वियर

अगर आप प्रोफेशनल हैं तो भी ब्लैक आपके लिए उपयुक्त कलर है। ऑफिस वियर में आप ब्लैक ट्राऊजर और साथ में ब्लाइट, रेड, ग्रीन, ब्लू, लैमन, पिंक, मोव किसी भी एलीमेंट कलर की शर्ट्स पहन सकती हैं। जब मौका हो किसी स्पेशल प्रेजेंटेशन का या इमर्जेंट मीटिंग का, तब आप ब्लैक एग्जीक्यूटिव स्कर्ट और ब्लेजर पहनकर सबको अपने काम के साथ-साथ अपने स्टाइल से भी इम्प्रेस कर सकती हैं।

### एक्ससेरीज

एक्ससेरीज आपको सैसेशनल लुक देती हैं। खूबसूरत और मोके के अनुसार पहनी हुई एक्ससेरीज आपको लुक में स्टाइल जोड़ती है और व्यक्तित्व को उभारती है। आप ब्लैक के साथ ब्लैक के विभिन्न शेड्स की एक्ससेरीज भी इस्तेमाल कर सकती हैं और कन्ट्रास्ट कलर्स की भी। यदि आप किसी फंक्शन में जा रही हैं और बैकलेस ड्रेस पहन रही हैं तो बैक पर टैटू बनवा सकती हैं। अगर आपकी ड्रेस का नेक डीप है तो गले में एक बड़ा स्टोन पेंडेंट पहन सकती हैं। इसे पतली चेन या ट्रांसपेरेंट श्रैड में पहनें तो बढ़िया लगेगा। ब्लैक ड्रेस के साथ आप पल या स्टोन की हल्की ज्यूलरी केरी कर सकती हैं। ऑफिस के लिए ब्लैक पल अच्छा ऑप्शन है, तो पार्टी में स्टोन ज्यूलरी ट्राई करें।

### हैंडबैग

पर्स रखना फैशन से ज्यादा जरूरत बन चुका है। ऑफिस के लिए ब्लैक लेदर हैंडबैग सही रहता है। खूबसूरत ब्लैक पर्स आपके लुक को और आकर्षक बना देगा। इसमें आप अपना जरूरी सामान भी केरी कर सकती हैं और साथ ही ये देखने में गुड लुकिंग भी होते हैं। इवनिंग फंक्शंस में वलासी बैग न सिर्फ पॉलिश लुक देगा बल्कि आपकी लुक को भी डायनामिज्म प्रदान करेगा।

### फुटवियर

ऑफिशियल आऊटफिट्स के साथ लेदर के ब्लैक शूज या ब्लैक बेलीज कंफर्टबल रहती हैं और सुंदर भी दिखती हैं। साड़ी या सूट जैसी इंडियन ड्रेस के साथ खूबसूरत स्टोन या एम्ब्रॉयड्री वाले फुटवियर आपके लुक को और ग्लैमरस और एलिमेंट बना देंगे। वेस्टर्न शॉर्ट ड्रेसिंग के साथ ब्लैक कलर के हाई हील्स या डिजाइनर सैंडल आपको हॉट लुक देगे।

हमेशा जवां दिखने की इच्छा यों तो हर इंसान में होती है, लेकिन महिलाओं में यह इच्छा कुछ ज्यादा ही प्रबल होती है। कभी मेकअप से, कभी कपड़ों से तो कभी अपने व्यवहार से खुद को युवा बनाए रखने का प्रयास लगातार जारी रहता है। कभी उनका यह प्रयास सफल होता है और कभी इसका असर उल्टा पड़ जाता है। वास्तव में महिलाओं की उम्र चार चीजों से झलकती है। वे कैसा मेकअप करती हैं, उनकी ड्रेसिंग कैसी है, उनका खानपान किस तरह का है और उनका व्यवहार क्या है। आइये जानें कि उम्र के अलग-अलग पड़ावों पर आप किस तरह खुद को युवा बनाए रख सकती हैं -

### तीस की उम्र में बीस की चाहत

बेशक तीस साल की महिलाओं को युवा ही माना जाता है, लेकिन फिर भी तीस की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते उम्र अपना असर दिखाने लगती है। और इसी उम्र में यह इच्छा पैदा होती है कि आप खुद को बीस साल की युवती की तरह दिखाएं, यानी देखने वाले को आपकी उम्र का जरा भी इल्म न हो। अगर आप अपनी उम्र को दस साल पीछे धकेलना चाहती हैं तो आपको इन चार बातों पर खास ध्यान देना होगा।

### आपकी ड्रेसिंग हो जवां

महिला की उम्र की चुगली करने में सबसे पहले ड्रेसिंग आती है। यानी आपकी ड्रेसिंग से ही इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि आपकी उम्र क्या है। तो तीस की उम्र में बीस का दिखने के लिए ड्रेसिंग कैसी होनी चाहिए? फैशन डिजाइनर निकेत कहते हैं, उम्र चाहे कोई भी हो अपने शरीर की संरचना के हिसाब से ही कपड़ों का चुनाव करना चाहिए। आप घुटने तक लंबी स्कर्ट, लंबी कुर्ती और स्लीव के साथ कॉरसेट को अपने वॉर्डरॉब में शामिल कर सकती हैं। अपने कपड़ों के लिए सूती और खादी के फैब्रिक का चुनाव करें। इस उम्र में साड़ी भी एक अलग लुक देती है। आप क्रेप, कॉटन, सिल्क, खादी, वीवर जैसे फैब्रिक की साड़ियां पहन सकती हैं, जिससे आपका लुक यंग और मेच्योर नजर आएगा। रंगों में भी आपको डार्क रंगों को चुनाव करना चाहिए।

### मेकअप बोलेगा कितनी यंग हैं आप

मेकअप आर्टिस्ट नेना अरोड़ा बताती हैं कि तीस की उम्र में आपकी रिफ्रेश चमकदार और टाइट होती है। ऐसे में मेकअप के साथ प्रयोग किए जा सकते हैं। अपनी त्वचा की रंगत और त्वचा की प्रकृति को ध्यान में रखकर ही अपने लिए मेकअप का चुनाव करें। टैटू को आंख मूंदकर अपनाने की जगह, ऐसा मेकअप करें जो आपके ऊपर अच्छा दिखे। मेकअप करने के लिए आप गहरे रंगों का इस्तेमाल कर सकती हैं।

### खानपान के समझें इशारे

बीएलके अस्पताल की चीफ डायटिशियन सुनीता रॉय चौधरी का कहना है कि तीस की उम्र में बीस का दिखने के लिए एक्ससेरीज करें। हर दिन टहलें, साइकलिंग और जॉगिंग भी करें। ताजा और ज्यादा फाइबर वाला खाना आपको जवां रखने में मदद करेगा।

### युवा हो आपका व्यवहार

युवा मनोविकित्सक डॉक्टर नीलम कुमार बोहरा का मानना है कि तीस की उम्र में महिलाओं को तनाव का सामना सबसे ज्यादा करना होता है। घर, परिवार और ऑफिस की कई जिम्मेदारियां तनाव को और बढ़ा देती हैं। यह तनाव चेहरे से झलकने लगता है। तनाव से दूर रहने और युवा दिखने के लिए छोटे-छोटे लक्ष्य बनाएं, सकारात्मक दोस्त बनाएं, ना कहना सीखें और नये रिश्तों को समझदारी और व्यवहारिकता के साथ संभालें।

### चालीस की उम्र रहिए प्यार में

ड्रेसिंग को भी दें महत्व - चालीस की उम्र, वह पड़ाव है जब आप उम्र के दौरा पर खड़े होते हैं। ऐसे में युवा दिखने के लिए कपड़ों में पर्युनिक को अपनाएं। कपतान स्टाइल के ट्यूनिंग, लॉन्ग जैकेट और वेस्ट कोट पहनें। रंगों के चुनाव में हल्के और गाढ़े के साथ पेट्रल रंगों का चुनाव करें।

मेकअप बोलेगा, आपकी उम्र का राज नहीं खोलेगा - 40 की उम्र में आपके चेहरे पर फाइन लाइंस और बढ़ती उम्र के निशान दिखने लगते हैं। इसलिए इस उम्र में मेकअप का चुनाव बहुत सोच-समझ कर करना चाहिए। अपने व्यक्तित्व, रंग और स्किन टोन को ध्यान में रखते हुए मेकअप करें।

खाना यानी उम्र छिपाना - 40 की उम्र में आमतौर पर महिलाओं का लाइफस्टाइल काफी बदल जाता है। महिलाओं का वजन

भी बढ़ जाता है। इस उम्र में भी खुद को जवां रखने के लिए अपने लाइफ स्टाइल को सक्रिय बनाएं। तीन बड़े और तीन छोटे मील लें। ज्यादा से ज्यादा तरल पदार्थ युक्त डाइट जैसे जूस, लस्सी, दूध, दही, फल, सलाद आदि लें। चाय-कॉफी से दूर रहें।

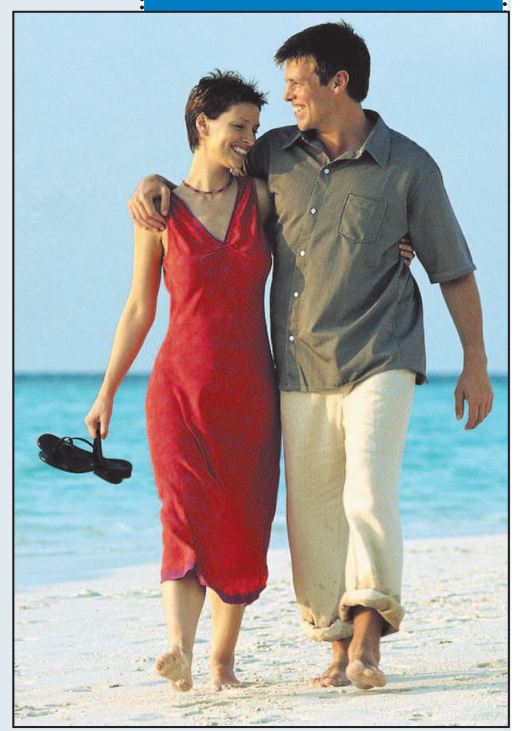
### 50 में खुद से करना सीखें प्यार

अब भी अहम है ड्रेसिंग - 50 की उम्र तक आते-आते आपकी उम्र कहीं ना कहीं झलकने लगती है। ऐसे में आपके कपड़े आपकी उम्र के राज को छुपाने में काफी मददगार साबित होते हैं। इस उम्र में ट्रेंडी, फैशनेबल और युवा दिखने के लिए लंबे एंकर लैथ के ट्यूनिंग पहनें। लंबे प्लाजो और ट्यूनिंग के साथ स्कार्फ का विकल्प भी अच्छा है। इस उम्र में रंगों का चुनाव करते वक्त ध्यान रखें। हल्के रंग इस उम्र में भी आपको जवां दिखने में मदद कर सकते हैं।

मेकअप, जरा सावाधानी से - 50 की उम्र में मेकअप के लिए खासा सावधान रहने की जरूरत होती है। ज्यादा मेकअप आपके चेहरे की पतली रेखाओं में भर जाता है, जिससे चेहरे की झुर्रियां और स्पष्ट नजर आने लगती हैं। इसलिए इस उम्र में हल्का और लिफ्टिड मेकअप इस्तेमाल करें। मेट और हल्के रंगों का ही चुनाव करें। ज्यादा ग्लॉसी या गाढ़े रंगों से दूर रहें। आईलाइनर पेंसिल वाला इस्तेमाल करें और आंखों को खूबसूरत बनाने के लिए मस्कारा जरूर लगाएं। जरूरी है इस उम्र में सही डाइट - 50 की उम्र तक आप हड्डियों और दिल की बीमारियों का शिकार होने लगती हैं। इस उम्र महिलाओं में फीमेल हार्मोन भी कम हो जाते हैं। ऐसे में उम्र की झलक दिखाई देने लगती है। लेकिन सही खानपान और व्यायाम आपको इस उम्र में भी युवा दिखने में मदद करते हैं। ओट्स, व्हीट प्लेक्स, स्प्राउट, ताजे फल जैसे पौधों, तरबूज उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा कर देते हैं। हल्का और तरल आहार लें। समय-समय पर जरूरी मेडिकल टेस्ट करवाती रहें। साथ ही हल्का व्यायाम भी करें।

### खुद पर दें ध्यान

यह उम्र खुद से प्यार करने की है। यह ना सोचें कि आपने जो करना था सो कर लिया, और अब इस उम्र में क्या करना? वास्तव में यही वह उम्र है, जब आपको अपने बारे में सोचना चाहिए। अपनी निजी जिंदगी पर ध्यान दें, बच्चों को उनकी लाइफ एन्जॉय करने दें और आप अपनी जिंदगी को अपने हिसाब से जिएं। नई चीजों के लिए पहल करें, हंसी-मजाक करें और घूमने-फिरने के लिए बाहर जाएं। बेशक उम्र का असर इंसान के शरीर पर होता ही है, लेकिन एक बात मान कर चलें कि उम्र सिर्फ एक मन-स्थिति है। लिहाजा उम्र को अपने मन-मस्तिष्क पर हावी न होने दें। उम्र को परसल करने के लिए और हमेशा युवा दिखने का एकमात्र यही मंत्र है। खुश रहें और युवा दिखें।





## पान मसाला, गुटखा, तंबाकू कंपनियों के नियमों में किया गया बदलाव

**- पैकिंग मशीनों को जीएसटी अधिकारियों के पास रजिस्टर्ड नहीं कराया तो लगेगा जुर्माना**

नई दिल्ली। तंबाकू, गुटखा और पान-मसाला उत्पाद बनाने वाली कंपनियों के लिए नियमों में बदलाव हुआ है। ये प्रोडक्ट्स बनाने वालों ने अगर 1 अप्रैल से अपनी पैकिंग मशीनों को गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (जीएसटी) अधिकारियों के पास रजिस्टर्ड नहीं कराया तो उन्हें 1 लाख रुपये तक का जुर्माना भरना पड़ सकता है। तंबाकू इंडस्ट्री में रेवेन्यू लीकेज को रोकने के लिए वित्त विधेयक 2024 में संशोधन किए गए हैं। कुछ स्थितियों में गैर-अनुपालन वाली मशीनों को जब्त किया जा सकता है। जीएसटी कार्रवाई ने पिछले साल तंबाकू निर्माताओं द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली मशीनों को रजिस्टर्ड करने के लिए एक विशेष प्रक्रिया की सिफारिश की थी। मौजूदा और नई लगी मशीनों का विवरण, उनकी पैकिंग क्षमता सहित फॉर्म जीएसटी एसआरएम-आई में देना होगा। हालांकि, ऐसा करने में विफल रहने पर कोई दंड की घोषणा नहीं की गई है। राजस्व सचिव संजय मल्होत्रा ने कहा कि जीएसटी परिपद ने पहले उक्त उत्पादों में उपयोग होने वाली मशीनों को उनकी उत्पादन क्षमता की निगरानी के लिए पंजीकृत करने का निर्णय लिया था। उन्होंने कहा कि हालांकि, अगर वे पंजीकरण करने में विफल रहे तो कोई जुर्माना नहीं था। इसलिए कार्रवाई ने फैसला किया कि कुछ दंड होना चाहिए। इसलिए वित्त विधेयक में आपको मशीनों को पंजीकृत नहीं करने के लिए एक लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

## देश में सेवा क्षेत्र की गतिविधियां जनवरी में छह महीने के उच्चतम स्तर पर

नई दिल्ली। भारत में सेवा क्षेत्र की गतिविधियां अनुकूल आर्थिक परिस्थितियों और सकारात्मक मांग की वजह से जनवरी में छह महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गईं। एक मासिक सर्वेक्षण में यह जानकारी दी गई है। मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया भारत सेवा पीएमआई कारोबारी गतिविधि सूचकांक जनवरी में 61.8 पहुंच गया। यह दिसंबर में 59 पर था। खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) की भाषा में 50 से ऊपर अंक का मतलब गतिविधियों में विस्तार से और 50 से कम अंक का आशय संकुचन से होता है। सर्वेक्षण सेवा क्षेत्र की करीब 400 कंपनियों को भेजे गए प्रश्नावली के जवाबों पर आधारित है। एचएसबीसी के एक अर्थशास्त्री ने कहा कि भारत की सेवा पीएमआई जनवरी में छह महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। नए व्यवसाय का विस्तार तेज गति से हुआ और भविष्य की गतिविधि के लिए प्रबंधकों की उम्मीदें मजबूत बनी हैं। कारोबारी गतिविधि सूचकांक में तेजी आई, जिससे संकेत मिलता है कि भारत का सेवा निर्यात मजबूत बना हुआ है। नई निर्यात बिक्री तीन महीनों में सबसे तेज गति से बढ़ी। कंपनियों ने अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, बाजिल, चीन, यूरोप, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका सहित दुनिया भर में ग्राहकों से लाभ का संकेत दिया। इस बीच एचएसबीसी इंडिया कंपोजिट पीएमआई आउटपुट इंडेक्स 58.5 से बढ़कर 61.2 हो गया।

## सिंगनेचर ग्लोबल ने गुरुग्राम में मूखामियों से साझेदारी की

नई दिल्ली। रियल्टी फर्म सिंगनेचर ग्लोबल ने गुरुग्राम में आवासीय परियोजनाएँ विकसित करने के लिए भूखामियों के साथ साझेदारी की है। कंपनी ने कहा कि इन परियोजनाओं की कुल राजस्व क्षमता 5,000 करोड़ रुपये से अधिक है। कंपनी ने कुल 21.38 एकड़ के भूखंड पर आवासीय परियोजनाएँ विकसित करने के लिए भूखामियों के साथ तीन अलग-अलग संयुक्त विकास समझौते (जेडीए) किए हैं। सिंगनेचर ग्लोबल के एक वे रिश्टे धिकारी ने कहा कि प्रमुख शहरों में आवास की बढ़ती मांग के बीच कंपनी ने अपने कारोबार का विस्तार करने के लिए ये समझौते किए हैं। उन्होंने बताया कि इन जेडीए से संभावित बिक्री आय 5,000 करोड़ रुपये से अधिक होगी। ये भूखंड गुरुग्राम के सेक्टर 71 में हैं और कंपनी की मौजूदा परियोजनाओं के नजदीक हैं। इससे कंपनी ने कहा कि आगे एक से दो साल के भीतर इन परियोजनाओं को पेश करने की उम्मीद है।

## नए वित्त वर्ष में पेट्रोलियम कंपनियों करेंगी 1.2 लाख करोड़ का निवेश

- निवेश से देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी

नई दिल्ली।

ऑयल एंड नैचुरल गैस कॉर्पोरेशन (ओएनजीसी) और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (आईओसी) सहित सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियाँ अगले साल से शुरू होने वाले नए वित्त वर्ष में करीब 1.2 लाख करोड़ रुपये का निवेश करने की तैयारी कर रही हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियाँ मुख्य रूप से तेल और गैस खोज, रिफाइनरी, पेट्रोसायन और पाइपलाइन कारोबार में यह निवेश करेंगी, जिससे देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी। बजट दस्तावेज 2024-25 के अनुसार 2024-25 में प्रस्तावित निवेश 31 मार्च को समाप्त होने वाले चालू वित्त की तुलना में लगभग पांच प्रतिशत अधिक होगा। 2023-24 में पेट्रोलियम कंपनियों का निवेश 1.12 लाख करोड़ रूप

रहने का अनुमान है। ओएनजीसी ने अगले वित्त वर्ष में 30,800 करोड़ रुपये के पूंजीगत खर्च की योजना बनाई है। कंपनी यह निवेश तेल और गैस के नए भंडार खोजने और पहले की गई खोजों को उत्पादन में लाने पर करेगी। यह 2023-24 के 30,500 करोड़ रूप के पूंजीगत व्यय से थोड़ा अधिक है। कंपनी देश के पूर्वी और पश्चिमी दोनों तटों पर खोजों का विकास कर रही है। इसी तरह ओएनजीसी की विदेशी इकाई ओएनजीसी विदेश लिमिटेड (ओवीएल) 2024-25 में 5,580 करोड़ रूप का निवेश करेगी। यह चालू वित्त वर्ष की तुलना में 68 प्रतिशत अधिक है। देश की सबसे बड़ी तेल रिफाइनरी कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (आईओसी) 30,910 करोड़ रूप के निवेश परियोजनाओं के साथ सबसे अधिक खर्च करने वाली कंपनी होगी। आईओसी यह निवेश मुख्य रूप से विस्तार

और ईंधन का उत्पादन करने वाली अपनी सात रिफाइनरियों के उन्नयन पर होगा। हालांकि, आईओसी का निवेश 2023-24 के खर्च 31,254 करोड़ रूप से कुछ कम है। भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) ने 2024-25 में 30 प्रतिशत अधिक यानी 13,000 करोड़ रूप के पूंजीगत व्यय का प्रस्ताव किया है। गैस कंपनी गैल इंडिया लिमिटेड का नियोजित निवेश 2024-25 में घटकर 8,000 करोड़ रूप से कुछ अधिक रहने का अनुमान है। पिछले वित्त वर्ष में कंपनी का निवेश 9,750 करोड़ रूप रहने का अनुमान है। ओएनजीसी की अनुपंगी कंपनी हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) वित्त वर्ष 2024-25 में 12,500 करोड़ रूप का निवेश करेगी, जो पिछले वित्त वर्ष के 12,000 करोड़ रूप के आंकड़े से कुछ अधिक है।

## मनी लाँड्रिंग मामले में कंपनी पर ईडी की जांच नहीं होगी: पेट्टीएम

नई दिल्ली।

देश के सबसे लोकप्रिय पेमेंट ऐप में शुमार पेट्टीएम की मुश्किलें खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं। पहले रिजर्व बैंक की ओर से पेट्टीएम पेमेंट बैंक पर रोक लगाए जाने के बाद प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की ओर से मनी लाँड्रिंग मामले में जांच की भी खबरें रही हैं। इस पर पेट्टीएम की पेरेंट कंपनी वन97 कन्सल्टिंग ने साफ कर दिया है कि उनके किसी भी संस्थान या अधिकारी के खिलाफ ईडी की जांच नहीं होने जा रही है।

यह सफाई उन खबरों के बाद आई है, जिसमें कहा गया था कि पेट्टीएम पेमेंट बैंक की अनियमितताओं के खिलाफ ईडी जांच करेगी। हालांकि, कंपनी ने पूरी तरह साफ कर दिया है कि उसके फाउंडर विजय शेरमा या कंपनी की किसी भी संस्था अथवा सब्सिडियरी के खिलाफ ईडी की जांच नहीं होगी। फिनटेक कंपनी ने यह जानकारी शेरमा बाजार को दी रेगुलैटरी फाइलिंग में बताई है। इस बीच पेट्टीएम के फाउंडर और सीईओ विजय शेरमा का कहना है कि वे



आरबीआई के साथ मिलकर मामले को सुलझाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कर्मचारियों को आश्वस्त किया कि आप हमारा पेरिक्टर हैं और कोई भी छंटनी नहीं होने जा रही है। सूत्रों के हवाले से बताया गया था कि अगर फंड में हेरफेर को लेकर पेट्टीएम के खिलाफ नए चार्जजें लगाए जाते हैं तो ईडी भी जांच कर सकता है। उन्होंने कहा था कि मनी लाँड्रिंग केस में आरबीआई की जांच से नए आरोप लगाए जाते हैं तो नियम के अनुसार इसकी जांच प्रवर्तन निदेशालय को सौंपी जा सकती है।

# वित्त वर्ष 2024-25 के लिए अग्र का बजट सर्व-समावेशी होगा: वित्त मंत्री खन्ना

लखनऊ।

उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने सोमवार को कहा कि वित्त वर्ष 2024-25 के लिए उनका बजट सर्व-समावेशी होगा जो राज्य को 1000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में मदद करेगा। खन्ना ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए विधानसभा में वार्षिक बजट पेश करने से पहले पत्रकारों से कहा कि बजट सर्व-स्पर्शी, सर्व-समावेशी और सर्वांगीण विकास वाला होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नीत सरकार का बजट उत्तर प्रदेश को 1000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य को

हासिल करने की दिशा में आगे ले जाएगा। उन्होंने कहा कि आगामी बजट में बुनियादी ढांचे, युवा रोजगार और महिला सशक्तिकरण पर जोर दिए जाएंगे। बजट में धार्मिक महत्व के स्थानों के लिए अधिक धन आवंटित करने के सवाल पर उन्होंने कहा कि यह सभी बुनियादी ढांचे के अंतर्गत आता है। इस बीच उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि राज्य के बजट का उद्देश्य उत्तर प्रदेश को सर्वोत्तम प्रदेश बनाना और राज्य को विकास के पथ पर आगे ले



जाना है। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि बजट बुनियादी ढांचे को मजबूत करेगा और इसमें गरीबों के कल्याण के लिए योजनाएं होंगी।

## पेट्टीएम के शेयर में लगातार तीसरे सत्र में गिरावट

नई दिल्ली। पेट्टीएम के शेयर में सोमवार को लगातार तीसरे सत्र में गिरावट आई। कंपनी के शेयर शुरुआती कारोबार में और 10 प्रतिशत गिर गए। बीएसई पर शेयर 10 प्रतिशत की गिरावट के साथ 438.35 रुपये पर आ गए। एनएसई पर 9.99 प्रतिशत गिरकर 438.50 रुपये पर पहुंच गए। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने पेट्टीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड को किसी भी ग्राहक खाते, प्रिप्रेड साधन, वॉलेट एवं फ्रास्टिंग में 29 फरवरी 2024 के बाद जमा या टॉप-अप स्वीकार न करने का गत बुधवार को निर्देश दिया था। इसके बाद से कंपनी के शेयर में लगातार गिरावट आ रही है। कंपनी के शेयर में लगातार तीन सत्र में 42 प्रतिशत से अधिक गिरावट आई है। इससे उसके बाजार मूल्यकन को 20,471.25 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। आरबीआई ने आदेश में कहा था कि पेट्टीएम का संचालन करने वाली कंपनी वन97 कन्सल्टिंग लिमिटेड और पेट्टीएम पेमेंट्स सर्विसेज के नोडल खातों को 29 फरवरी से पहले जल्द-से-जल्द जल्द समाप्त किया जाना चाहिए। वन97 कन्सल्टिंग के पास पेट्टीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी है। वन97 कन्सल्टिंग लिमिटेड के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीओओ) विजय शेरमा की बैंक में 51 प्रतिशत हिस्सेदारी है।



## वेतन और पेंशन बढ़ाने से बैंक को होगा 26000 करोड़ का नुकसान: एसबीआई चेयरमैन

नई दिल्ली।

देश के प्रमुख बैंक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने कहा है कि उसके कर्मचियों का वेतन और पेंशनधारकों को पेंशन बढ़ाने से बैंक को लगभग 26,000 करोड़ का नुकसान होगा। एसबीआई के चेयरमैन दिनेश कुमार खर्रा ने कहा कि हाल में अदालत के आदेश के बाद बैंक को अपने 1.8 लाख पेंशनधारकों को 50 प्रतिशत की दर से भुगतान करने का फैसला किया है। जिससे वेतन वृद्धि के प्रभाव से मार्च के अंत तक बैंक के मुनाफे में 25,990 करोड़ रुपये की कमी

आएगी। ऐसा इसलिए है, क्योंकि बैंक ने पहले ही दिसंबर, 2023 तक 13,400 करोड़ रुपये और दिसंबर तिमाही में अतिरिक्त 7,100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। इसके अलावा मार्च तिमाही में 5,490 करोड़ रुपये और रखने होंगे। इस तरह, कुल 25,990 करोड़ का प्रावधान करना होगा, जिसमें ज्यादातर पेंशन पर खर्च किए जाएंगे। बैंक और कर्मचारी संघों के साथ हुए समझौतों के तहत 17 फीसदी ऊंचे वेतन का प्रावधान किया गया है। इसमें पेंशन बढ़ाने का भी प्रस्ताव है। कर्मचारियों का यह

## शेयर बाजार गिरावट पर बंद



मुम्बई। घरेलू शेयर बाजार सोमवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के पहले ही कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हवाी रहने से आई है। आज के कारोबार के दौरान बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी के अलावा अन्य बाजारों में भी गिरावट रही। वहीं बीएसई मिडकैप इंडेक्स 0.02 फीसदी ऊपर आकर बंद हुआ जबकि स्मॉलकैप इंडेक्स 0.23 फीसदी नीचे आया। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयर्स वाला बीएसई सूचकांक 354.21 करीब 0.49 फीसदी टूटकर 71,731.42 अंक पर बंद हुआ। वहीं दूसरी ओर पचास शेयर्स वाला निफ्टी भी 82.10 अंक तकरीबन 0.38 फीसदी नीचे आया। निफ्टी दिन के अंत में 21,771.70 अंक पर आकर बंद हुआ। सोमवार के कारोबार के दौरान टाटा मोटर्स, कोल इंडिया बीपीसीएल, सन फार्मा और सिप्ला निफ्टी के लाभ वाले शेयर रहे जबकि यूपीएल, भारतीय एयरटेल, नूजा फाइनेंस, बजाज फिनसेव और एचडीएफसी लाइफ निफ्टी के नुकसान वाले शेयर रहे। इससे पहले शुक्रवार को बाजार तेजी के साथ बंद हुआ था। वहीं आज सुबह बाजार की कमजोर शुरुआत हुई। बीएसई सेंसेक्स फ्लैटलाइन से 16 अंक नीचे 72,069 पर कारोबार कर रहा था और एनएसई निफ्टी 50,21,860 पर कारोबार कर रहा था। वहीं एशियाई बाजारों में भी गिरावट आई क्योंकि फेड प्रमुख जेरोम पॉवेल ने में कहा कि केंद्रीय बैंक इस साल व्याज दर में कटौती की दिशा में बाजार को उम्मीद से धीमी गति से कदम उठाएगा। हेंग सेंग, एएसएक्स 200 और कोस्मी 0.55-2 फीसदी गिरे जबकि केवल निक्केई में 0.3 फीसदी की बढ़त देखने को मिली। अमेरिकी बाजारों में एशुक्रवार को एसएंडपी 72,069 पर कारोबार कर रहा था और एनएसई निफ्टी 50,21,860 पर कारोबार कर रहा था। वहीं

## आईबीबीआई ने व्यक्तिगत गारंटर के लिए आरपी पर लगाई रोक हटाई

अब दोनों के लिए एक ही समाधान पेश हो सकते हैं



संशोधित वेतन नवंबर, 2022 से ही प्रभावी माना जाएगा। खर्रा ने बताया कि 2023-24 की आखिरी तिमाही यानी मार्च तक वेतन वृद्धि का प्रस्ताव बढ़कर 26 हजार करोड़ रुपये हो जाएगा। बैंक ने हाल में ही अपना तिमाही परिणाम जारी कर दिया, जिसमें बैंक ने बताया कि उसका मुनाफा 35 फीसदी कम हो गया है। खर्रा ने कहा है कि कर्मचारियों का वेतन और पेंशनधारकों को पेंशन बढ़ाने की वजह से बैंक के मुनाफे में बड़ी गिरावट देखी गई है। उन्होंने कहा कि यदि वेतन और पेंशन के लिए एकमुश्त प्रावधान नहीं होता तो बैंक का मुनाफा 16,264 करोड़ रुपये रहता।

## आईबीबीआई ने व्यक्तिगत गारंटर के लिए आरपी पर लगाई रोक हटाई

अब दोनों के लिए एक ही समाधान पेश हो सकते हैं

नई दिल्ली।

भारतीय दिवाला एवं रोधन अक्षता बोर्ड (आईबीबीआई) ने किसी कंपनी व उसके व्यक्तिगत गारंटर की समाधान प्रक्रिया के लिए एक ही इन्क्विरी प्रोफेशनल (आरपी) पर लगाई गई रोक हटा ली है। अब दोनों के लिए एक ही समाधान पेश हो सकते हैं। बोर्ड ने यह फैसला दोनों प्रक्रियाओं के बीच बेहतर सामंजस्य और प्रभावी सहयोग के लिए किया है। आईबीबीआई व्यक्तिगत गारंटर से लेकर कॉर्पोरेट देनदार नियमन 2019 में किया गया बदलाव 31 जनवरी से प्रभावी हो गया। आईबीबीआई ने पर्सनल गारंटर्स के मामले में लेनदारों की बैठक दिवालिया मसले पर अनिवार्य करने के प्रावधान में संशोधन किया है। इससे पहले व्यक्तिगत गारंटर की तरफ से जमा कर्वाई गई भुगतान योजना के बाद रिजॉल्यूशन प्रोफेशनल उसकी व्यवहार्यता का आकलन कर निर्णायक प्राधिकारी के पास रिपोर्ट इस सिफारिश के साथ जमा कराएंगे कि लेनदारों की बैठक बुलाई जाए या नहीं। अगर प्रोफेशनल को लगता है कि ऐसी बैठक अनावश्यक है तो वह इसकी वजह बताएंगे। रिजॉल्यूशन प्रोफेशनल किसी बीमार कंपनी का परिचालन तब देखते हैं जब उसकी दिवालिया प्रक्रिया शुरू होती है और वह समाधान प्रक्रिया में लेनदारों की समिति, निर्णायक प्राधिकरण और संभावित बोलीदाताओं के बीच समन्वय करते हैं। यह प्रावधान शुरुआत में कम जटिल मामलों के तेजी से समाधान निकालने के लिए किया गया था जहाँ लेनदारों की बैठक लगातार बुलाने की अनिवार्य जरूरत न हो। आईबीबीआई ने इस प्रावधान में संशोधन व्यक्तिगत गारंटर के मामले में पेश किया है, जिससे अक्सर विस्तृत वित्तीय पारस्परिक निर्भरता व कई लेनदार जुड़े होते हैं और वहाँ और उचित प्रक्रिया की दरकार होगी। आईबीबीआई ने कहा कि लेनदारों को अनिवार्य तौर पर शामिल किए जाने से समाधान प्रक्रिया का विस्तृत व सहयोगकारी तरीका सामने आएगा, जिससे इच्छित नतीजे मिलने और व्यवस्था की निष्पत्ता बड़ेगी।

## टाटा नेक्सन ने 6 लाख यूनिट उत्पादन का आंकड़ा किया पार

- उपलब्धि को हासिल करने में कार को सिर्फ 76 महीने लगे

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स कंपनी की टाटा नेक्सन ने 6 लाख यूनिट उत्पादन का आंकड़ा पार कर लिया है। इस उपलब्धि को हासिल करने में कार को सिर्फ 76 महीने लगे हैं। अप्रैल, 2023 में टाटा नेक्सन ने उत्पादन में 5 लाख का आंकड़ा छुआ था। टाटा नेक्सन में दो वेरिएंट आईसीडी और ईवी मॉडल में बिक्री के लिए उपलब्ध है। जहाँ रेगुलर टाटा नेक्सन एसयूवी की कीमत 8.10 लाख रुपये से शुरू होती है। वहीं इलेक्ट्रिक वेरिएंट की कीमत 14.74 लाख रुपये एक्स-शोरूम से शुरू होती है। बता दें टाटा नेक्सन एसयूवी स्मार्ट, प्योर, क्रिएटिव और फियरलेस ट्रिप्स में उपलब्ध है। इसके अलावा टाटा नेक्सन फेसलिफ्ट को पिछले साल सितंबर में लॉन्च किया गया था। टाटा नेक्सन फेसलिफ्ट एसयूवी दो इंजन ऑप्शन के साथ आती है। इसमें 1.2-लीटर टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन है। यह इंजन 120 बीएचपी और 170 एनएम का टॉर्क पैदा करने में सक्षम है। यह इंजन तीन गियरबॉक्स 6-स्पीड मैनुअल, 6-स्पीड एमटी और 7-स्पीड डीसीटी गियरबॉक्स के साथ आता है।

## दिसंबर तिमाही के नतीजे के बाद इंडिगो के शेयर सार्वजनिक उच्च स्तर पर

मुम्बई।

इंडिगो की मूल कंपनी, इंटरग्लोब एविएशन कंपनी द्वारा दिसंबर तिमाही के मजबूत आंकड़ों की रिपोर्ट के बाद सोमवार को बीएसई पर 3301.40 रुपये के सार्वजनिक उच्च स्तर पर पहुंच गईं। सोमवार को शुरुआती कारोबार में कंपनी का शेयर 139.15 रुपये की तेजी के साथ 3266.15 रुपये पर पहुंच गया था। दिसंबर तिमाही में एविएशन कंपनी का टैक्स के बाद मुनाफा 15 गुना बढ़कर 2998 करोड़ रुपये हो गया, जबकि इसी अवधि में इसका रेवेन्यू भी 30.1 फीसदी बढ़ा। एविएशन कंपनी द्वारा दिसंबर तिमाही के नतीजे जारी करने के बाद ब्रोकरेज मार्गिन स्ट्रेनली ने स्टॉक पर ओवरवैलेंट रेटिंग बरकरार रखी है और लक्ष्य को 3745 रुपये से बढ़कर 4145 रुपये कर दिया है। विमानन दिग्गज इंडिगो ने शुक्रवार को अपनी दिसंबर, 2023 को समाप्त तिमाही के नतीजे जारी कर दिए हैं। कंपनी ने 2,998 करोड़ का लाभ कमाया, जबकि एक साल पहले की अवधि में यह 1,418 करोड़ रुपये था। इस बीच परिचालन से राजस्व बढ़कर 19,452 करोड़ हो गया। हवाई यात्रा के लिए मजबूत मांग से कंपनी का मुनाफा बढ़ा है। कम लागत वाली विमानन कंपनी इंडिगो के पास 358 विमानों का भारत का सबसे बड़ा एयरलाइन बेड़ा है और इसकी बाजार हिस्सेदारी 62 फीसदी से अधिक है।

## आरबीआई की एमपीसी छठी मौद्रिक समीक्षा में भी नीतिगत दरें बरकरार

रहने की संभावना

## आरबीआई 8 फरवरी को मौद्रिक नीति समीक्षा के बाद अपना निर्णय सुनाएगा

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की छह सदस्यों वाली मौद्रिक नीति समिति लगातार छठी मौद्रिक समीक्षा में नीतिगत दरें जस की तस बनाए रख सकती है। एक सर्वेक्षण में शामिल सभी 10 प्रतिभागियों की यह राय है। आरबीआई 8 फरवरी को मौद्रिक नीति समीक्षा के बाद अपना निर्णय सुनाएगा। मौद्रिक नीति समिति ने मई 2022 से फरवरी, 2023 के बीच 250 आधार अंक की बढ़ती के साथ शेयर बाजार में गिरावट पर रोक लगाई है। इसके बाद अप्रैल, 2023 की बैठक में दर वृद्धि पर विचार लगा दिया गया था। अर्थशास्त्री कहते हैं कि पिछली मौद्रिक नीति की बैठक के बाद से वैश्विक घटनाक्रम में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ है, जिससे कोई वजह नहीं दिखती कि आरबीआई दरों में सख्ती करे। फरवरी की मौद्रिक नीति समिति की बैठक में सबसे अहम बात यह होगी कि बैंकिंग तंत्र में तरलता की कमी पर केंद्रीय बैंक का क्या रुख रहता है। सभी प्रतिभागियों ने एकमत से कहा कि तरलता बढ़ाने के लिए आरबीआई



## 34 साल के हुए भुवनेश्वर

**मुम्बई ।** भारतीय क्रिकेट टीम से बाहर चल रहे मध्यम तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार सोमवार को 34 साल के हो गये। इस अवसर पर उन्हें साथी क्रिकेटर्स और प्रशंसकों ने बधाइयां दी हैं। भुवनेश्वर भारतीय टीम के साथ ही प्रथम श्रेणी क्रिकेट में उत्तर प्रदेश के और से भी खेलते हैं। भुवनेश्वर ने भारतीय टीम की ओर से सभी प्रारूपों में 229 मैच खेले हुए 294 विकेट लिए हैं। भुवनेश्वर का सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन साल 2014 में इंग्लैंड के खिलाफ रहा था जब उन्होंने 31 ओवर में 2.64 की इकोनॉमी की दर से 6 विकेट लिए थे। साल 2016 में उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ 33 रन देकर 5 विकेट लिए थे। भुवनेश्वर ने साल 2018 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 24 रन देकर 5 विकेट लिए थे। वहीं एशिया कप 2022 में उन्होंने टी20 प्रारूप में शानदार गेंदबाजी दिखाते हुए अफगानिस्तान के खिलाफ 4 ओवर में 4 रन देकर पांच विकेट लिए थे। भूवी के नाम से लोकप्रिय यह गेंदबाज अपनी स्विंग गेंदबाजी के कारण जाना जाता है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के अलावा घरेलू क्रिकेट और आईपीएल में भी उनका प्रदर्शन शानदार रहा है।

# भारतीय टीम ने इंग्लैंड को 106 रनों से हराया, सीरीज 1-1 से बराबरी पर आयी

### विशाखापत्तनम ।

भारतीय टीम ने इंग्लैंड को दूसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में 106 रनों से हराकर पांच मैचों की सीरीज में 1-1 से बराबरी हासिल कर ली है। इंग्लैंड ने हैदराबाद में खेला पहला टेस्ट जीता था जबकि यहां भारतीय टीम जीती है। मैच के चौथे दिन जीत के लिए मिले 399 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लैंड की टीम अपनी दूसरी पारी में 292 रनों पर ही आउट हो गयी। इस प्रकार भारतीय टीम को मैच में 106 रनों से जीत मिली है। इंग्लैंड की ओर से दूसरी पारी में जैक क्रॉवली ने सबसे ज्यादा 73 रन बनाये पर वह अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाये। क्रॉवली के अलावा कोई भी अन्य बल्लेबाज टिक नहीं पाया। विकेटकीपर बल्लेबाज बेन फोक्स ने 36 और स्पिन ऑलराउंडर टॉम

हार्टले ने भी 36 रन बनाये। कप्तान बेन स्टोक्स 11 रन बनाकर रन आउट हुए, जोनी बेयरेस्टो 26 रन बनाकर पेवेलियन लौटे। वहीं भारतीय टीम की ओर से जसप्रीत बुमराह और रविचंद्रन अश्विन ने तीन-तीन विकेट लिये जबकि अक्षर पटेल, मुकेश कुमार और कुलदीप यादव को एक-एक विकेट मिला। इस मैच में भारतीय टीम को जीत में यशस्वी जायसल, शुभमन गिल और जसप्रीत बुमराह की अहम भूमिका रही। यशस्वी ने जहां पहली पारी में दोहरा शतक लगाया, वहीं शुभमन ने दूसरी पारी में शतक लगाया। भारत की ओर से जसप्रीत बुमराह ने पहली पारी में छह विकेट और दूसरी पारी में तीन विकेट लिए। इससे पहले आज सुबह एक विकेट पर 67 रनों से आगे खेलते हुए क्रॉली के अर्धशतक से इंग्लैंड ने लक्ष्य का पीछा करते हुए लंच तक 194

रनों के अंदर ही छह विकेट खो दिये। चौथे दिन क्रॉली ने आक्रामक पारी खेली। एक छक्के की सहायता से 73 रन बनाए। वहीं भारतीय टीम की ओर से आर अश्विन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 3 विकेट लिए। आज चौथे दिन शुभमन गिल चौटिल होने के कारण मैदान पर नहीं उतरे। उनकी जगह सरफराज खान क्षेत्ररक्षण के लिए उतरे। वहीं इससे पहले तीसरे दिन भारतीय टीम अपनी दूसरी पारी में दूसरी पारी में 255 रन बनाकर आउट हो गयी। भारतीय टीम को इस मैच में पहली पारी के आधार पर 143 रन बढ़त थी। इंग्लैंड की ओर से दूसरी पारी में स्पिनरों ने खास दबाव बनाये रखा टॉम हार्टले ने 4 जबकि रेहान अहमद ने 3 विकेट लिए। इस प्रकार इन दोनों ने कुल 7 विकेट लिए। वहीं दो विकेट जेम्स एंडरसन और शोपेन बशीर ने लिए।



जसप्रीत बुमराह ने दूसरे टेस्ट के दूसरे दिन पहली पारी में छह विकेट लेकर 253 रनों पर ही रोक दिया था। इस प्रकार पहली पारी के आधार पर भारतीय टीम के पास 143 रन बढ़त थी। इंग्लैंड की ओर से दूसरी पारी में स्पिनरों ने खास दबाव बनाये रखा टॉम हार्टले ने 4 जबकि रेहान अहमद ने 3 विकेट लिए। इस प्रकार इन दोनों ने कुल 7 विकेट लिए। वहीं दो विकेट जेम्स एंडरसन और शोपेन बशीर ने लिए।

# तुर्की में महिला फुटबॉल कप में भाग लेगी भारतीय टीम

### नई दिल्ली ।

भारतीय सीनियर महिला टीम 21 से 27 फरवरी तक तुर्की में होने वाले महिला कप फुटबॉल टूर्नामेंट में भाग लेगी। भारतीय टीम के अलावा एस्टोनिया, कोसोवो और हांगकांग की टीमों भी राउंड-रॉबिन प्रारूप में होने वाले इस टूर्नामेंट में भाग लेंगी। इस टूर्नामेंट में हर टीम एक-दूसरे से एक बार खेलेगी और राउंड-रॉबिन चरण के अंत में तालिका में शीर्ष पर रहने वाली टीमों विजयी घोषित की जाएंगी। भारतीय टीम अपना पहला मुकाबला 21 फरवरी को एस्टोनिया से खेलेगी। इसके बाद उसे हांगकांग से 24 फरवरी को कोसोवो से 27 फरवरी को खेला जाएगा। भारतीय टीम तीसरी बार इस टूर्नामेंट में भाग लेगी। उसने इससे पहले 2019 और 2021 में भी इसमें भाग लिया था। इस टूर्नामेंट के लिए अभ्यास करने में 10 मुख्य कोच लैंगम चाओबा देवी की निगरानी में नयी फरवरी से भुवनेश्वर में टीम का एक सप्ताह का शिविर भी होगा। भुवनेश्वर में शिविर के लिए सभ्यवित्त खिलाड़ी इस प्रकार हैं: गोलकीपर: अशिका, एलंगबाम पथोई चानू, मोनालिसा देवी मोइरंगथम, श्रेया हुडा डिफेंडर: आशांला देवी लोइंगबाम, अस्म आराव, खलिया छिब्र, जूली किरान, ममता, रंजना चानू सोरोखेबम, शिल्की देवी हेमम मिडफील्डर: अंजु तमांग, इंदुमति काथिरसन, काजोल डिसूजा, कार्तिका अंगमुथु, कृतिना देवी थानाओजम, मनीषा, पवित्रा मुर्गेसन, प्रियंका देवी नाओरेम, संगीता बासफोर फॉरवर्ड: ग्रेस डोंगमई, ज्योति, करिशमा पुरूषोत्तम शिरवोइकर, काव्या पक्षीरिसामी, लिंडा कोम सर्टी, नेहा, प्यारी खाखा, संघ्या रंगानथन, संजु, सोम्या गुगुलोथ।



## ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू शॉर्ट तीसरे वनडे से बाहर कैनबरा ।

वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे वनडे से पहले ऑस्ट्रेलियाई टीम के बल्लेबाज मैथ्यू शॉर्ट को हेमस्ट्रिंग की चोट के कारण टीम से बाहर कर दिया गया है। उनकी जगह बेन मैकडरमॉट को शामिल किया गया है। रविवार को मैथ्यू शॉर्ट को वेस्टइंडीज पर ऑस्ट्रेलिया की श्रृंखला जीत के दौरान हेमस्ट्रिंग की चोट का सामना करना पड़ा था। छठे नंबर पर बल्लेबाजी करने आने के बाद उन्होंने बल्ले से 55 गेंदों पर 41 रन बनाए, लेकिन चोट के कारण वह फील्डिंग करने नहीं उतरे। बेन मैकडरमॉट ने शनिवार को तस्मानिया के खिलाफ चल रहे शेफील्ड शिल्ड मैच में क्रासलेंड के लिए नाबाद 146 रन बनाए। अब वह सोमवार को कैनबरा में ऑस्ट्रेलिया वनडे टीम के साथ जुड़ने के लिए मैच से हट गए हैं, और यह मैच मंगलवार को मनुका ओवल में खेला जाएगा। 2018 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू करने के बाद से बेन मैकडरमॉट ने ऑस्ट्रेलिया के लिए 25 टी20 और छह वनडे मैच खेले हैं। ऑस्ट्रेलिया के लिए उनका आखिरी वनडे मैच मार्च-अप्रैल 2022 में पाकिस्तान दौरे पर आया था। जहां उन्होंने लाहौर में प्रारूप में अपना एकमात्र शतक बनाया था। यह देखना बकी है कि मैथ्यू शॉर्ट वेस्टइंडीज के खिलाफ 9, 11 और 13 फरवरी को होने वाले आगामी टी20 मैचों के लिए फिट होंगे या नहीं। प्रतियोगिता में 541 रन बनाने के लिए बिग बैश लीग (बीबीएल) में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुने जाने के बाद मैथ्यू शॉर्ट ने ऑस्ट्रेलिया के व्हाइट-बॉल सेट-अप में अपना स्थान अर्जित किया। तीसरे मैच के लिए ऑस्ट्रेलिया वनडे टीम- स्टीव मिथ (कप्तान), सीन एबॉट, जेवियर बार्टलेट, जेक फेजर-मैकगर्क, कैमरून ग्रीन, आरोन हार्डी, जोश हेजलवुड (उप-कप्तान), जोश इंग्लिश, मार्नस लाबुशेन, लॉस मॉरिस, बेन मैकडरमॉट, विल सदरलैंड, एडम जम्पा।

# एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2023-24 के लिए भुवनेश्वर पहुंची भारतीय पुरुष टीम

### भुवनेश्वर ।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम अपने एफआईएच प्रो लीग 2023-24 अभियान की शुरुआत करने के लिए सोमवार को भुवनेश्वर पहुंच गई। भारतीय टीम पिछले सीजन में नीदरलैंड, ग्रेट ब्रिटेन और बेल्जियम के बाद चौथे स्थान पर रही थी। एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2023-24 (पुरुष) राउटकेला के किरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम में जाने से पहले 10 से 16 फरवरी तक कलिंगा हॉकी स्टेडियम में होने वाली है, जहां लीग 19 से 25 फरवरी तक जारी रहेगी।

### 2023-24 (पुरुष) के भारत चरण में भाग लेगी। जहां वो भुवनेश्वर और राउटकेला में एक-दूसरे का सामना करेंगी। भारत सीजन के अपने पहले मैच में 10 फरवरी को मैक्स कोल्डसा की स्पेन से भिड़ेगी। उसके बाद 11 फरवरी को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाली टीमें नीदरलैंड की चुनौती का सामना करेगा। थोड़े समय के ब्रेक के बाद वे 15 फरवरी को ऑस्ट्रेलिया से भिड़ेंगे। फिर, वो 16 फरवरी को भुवनेश्वर चरण के आखिरी मैच में आयरलैंड से भिड़ेंगे। एफआईएच प्रो लीग



2023-24 की तैयारियों पर प्रकाश डालते हुए कप्तान हसनप्रभात सिंह ने कहा, हम अभी दक्षिण अफ्रीका के एक सफल दौरे से वापस आए हैं। जहां हमने प्रो लीग शुरू करने के लिए फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका और नीदरलैंड के खिलाफ खेला था। इस बार कुछ युवा खिलाड़ियों को टीम में शामिल किया गया है और यह

### संक्षिप्त समाचार



## कोच ज्याला बोले, यशस्वी इन कारणों से अन्य क्रिकेटर्स से हैं अलग

**मुंबई ।** क्रिकेटर यशस्वी जायसवाल पदार्पण के बाद से ही शानदार प्रदर्शन करते आ रहे हैं। उन्होंने टेस्ट में अब तक दो शतक भी लगाये हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ पदार्पण करने वाले यशस्वी ने अब इंग्लैंड के खिलाफ शानदार बल्लेबाजी कर सभी को प्रभावित किया है। इस बल्लेबाज के बचपन के कोच ज्याला सिंह ने उसकी सफलता का राज बताया है। कोच के अनुसार खेल के प्रारूपों के बीच अनुकूलन क्षमता और सहज प्रवृत्ति के कारण ही वह तेजी से सफल हुआ है और यही गुण उसे अन्य प्रतियोगियों से अलग बनाते हैं। इसी कारण वह अपने साथियों से अलग दिखता है। यशस्वी ने 22 साल और 36 दिन की उम्र में दोहरा शतक लगाकर एक अहम उपलब्धि हासिल की है। सुनील गावस्कर के बाद टेस्ट में दोहरा शतक बनाने वाले वह देश के तीसरे सबसे युवा खिलाड़ी हैं। ज्याला ने कहा, 'जूनियर क्रिकेट में उसने मुंबई अंडर-16 की ओर से दोहरा शतक लगाया था। मुंबई अंडर-19 के लिए भी, इराणी कप, दलीप ट्रॉफी और विजय हजारे ट्रॉफी में भी उसने दोहरा शतक लगाया था। वह अपनी बल्लेबाजी में आक्रामक प्रवृत्ति के कारण ही लंबी पारी खेल पाता है। उन्होंने कहा, 'वह हमेशा ही ही आक्रामक रख अपना कर गेंदबाजों पर दबाव डालता है क्योंकि वह बाउंड्री लगाता रहता है। उसने अपने क्रिकेट को इसी तरह तैयार किया है।

## हार्मिसन ने बुमराह और शमी की जमकर प्रशंसा की

**विशाखापत्तनम ।** इंग्लैंड के पूर्व तेज गेंदबाज स्टीव हार्मिसन ने भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद शमी की जमकर प्रशंसा की है। हार्मिसन के अनुसार उन्हें इन दोनों को गेंदबाजी करते हुए देखना पसंद है। इस पूर्व तेज गेंदबाज के अनुसार शमी और बुमराह के शानदार कौशल के कारण ही भारतीय टीम कटिन हालातों में भी एक बेहतर टीम बनकर उभरी है। शमी हालांकि टखने की चोट के कारण अभी तक इंग्लैंड के खिलाफ इस सीरीज में नहीं खेल पाए हैं। वहीं बुमराह ने रिवर्स स्विंग के जरिये दूसरे टेस्ट में इंग्लैंड के बल्लेबाजी क्रम को ध्वस्त किया। इस मैच में बुमराह ने घरेलू धरती पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए शानदार गेंदबाजी की। हार्मिसन ने कहा, 'ये दोनों ही शानदार प्रदर्शन करते रहे हैं। यह उनके स्तर को दिखाता है। यदि आपके पास बेहतरनी कौशल है तो आप मुकाबले में बने रहेंगे, यही एंडरसन और बुमराह के पास है। ये दोनों ही अविश्वसनीय गेंदबाज हैं। भारत में केवल एक टेस्ट खेलने वाले हार्मिसन कमेंट्री के लिए यहां आए हैं। वह सिराज की गेंदबाजी के भी प्रशंसक हैं। हार्मिसन जब खेलते थे तब भारत के पास अब की तरह विश्व स्तरीय तेज गेंदबाज नहीं थे और हार्मिसन भारत में तेज गेंदबाजी के तेजी से विकास को लेकर उत्साहित हैं। उन्होंने कहा, 'बुमराह, शमी और यहां तक कि सिराज का कौशल शानदार है। मुझे उन्हें गेंदबाजी करते देखना पसंद है। उनके पास एक शानदार गेंदबाजी आक्रमण, शानदार स्पिन आक्रमण और सीम गेंदबाज हैं जो दुनिया में कहीं भी कहीं नहीं मिले। यही कारण है कि वे दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीमों में से एक हैं।

# पूर्व पाक कप्तान बोला, पीसीबी में इस कारण काम नहीं करना चाहते कोच



### कराची ।

पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान मिस्बाह उल हक ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के तौर तरीकों की आलोचना करते हुए कहा है कि वह दूर तक की नहीं सोचती। इसी कारण उसे विदेशी ही नहीं देशी कोच भी नहीं मिल रहे। मिस्बाह साल 2019 से

2021 के बीच पाकिस्तान टीम के मुख्य कोच और मुख्य चयनकर्ता रहे थे। उन्होंने इस पर भी नाराजगी जतायी कि पाकिस्तान क्रिकेट में खिलाड़ियों और कोचों को एक या दो श्रृंखलाओं में खराब प्रदर्शन के आधार पर हट दिया जाता है। इसके अलावा बोर्ड के शीर्ष प्रबंधन में बदलाव के कारण भी उन्हें हटाया जाता है। एक स्थानीय टूर्नामेंट में हैदराबाद फां चाइजी को कोर्चिंग दे रहे मिस्बाह ने कहा कि अगर आप बोर्ड की नीतियों को देखें तो विदेशी कोच ही नहीं बल्कि हमारे स्थानीय कोच भी पीसीबी के साथ काम नहीं करना चाहते हैं। उन्होंने

## रोहित ने पकड़ा ओली का शानदार कैच

### विशाखापत्तनम ।

भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा 36 साल के हो गये हैं पर उनकी फिटनेस अब भी शानदार बनी हुई है। रोहित भले ही इस सीरीज में अब तक अधिक रन नहीं बना पाये हैं पर पर उन्होंने शानदार क्षेत्ररक्षण और कप्तानी की है। यह दूसरे टेस्ट के चौथे दिन उन्होंने रिलप में एक ऐसा कटिन कैच पकड़ा जिसे देखकर सभी हैरान रह गये। रोहित ने रिलप में इस कैच को पकड़ने में केवल 0.45 सेकेंड का समय लिया। ये कैच इसलिए भी अहम है क्योंकि ये उसी ओली पोप का था जिसने भारत के खिलाफ हैदराबाद टेस्ट की दूसरी पारी में 196 रन बनाकर भारतीय टीम के हाथों से मैच छीन लिया था। ओली जब आउट हुए तब वह 23 रनों पर खेल रहे थे। उन्हें रोहित ने आर अश्विन की गेंद पर कैच किया। ओली के आउट होते ही भारतीय खेमे में खुशी की लहर छा गयी। इससे पहले इस मैच में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पहली पारी में यशवी जायसवाल के 209 रन की बदैलत 396 रन बनाये जबकि दूसरी पारी में शुभमन गिल के शतक की सहायत से 255 बनाकर इंग्लैंड को जीत के लिए 399 रनों का लक्ष्य दिया।



## जून में टी20 विश्वकप जीत सकती है भारतीय टीम : कस्टर्न

**केपटाउन ।** भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कोच गैरी कस्टर्न ने कहा है कि भारतीय टीम इसी साल जून में होने वाले टी20 विश्वकप को जीतने में सक्षम है। कस्टर्न के कोच रहते ही भारतीय टीम ने 2011 में एकदिवसीय विश्वकप जीता था। भारतीय टीम एक दशक से कोई आईसीसी खिताब नहीं जीत पायी है। इस पूर्व कोच का मानना है कि भारतीय टीम इस इंतजार को खत्म करने में सक्षम है और शायद इसी साल टी20 विश्व कप में वह जीत हासिल कर लेगी। भारतीय टीम के साथ 2008 से 2011 तक मुख्य कोच रहे कस्टर्न ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि विश्व कप जीतना आसान है। बिलकुल भी नहीं। ऑस्ट्रेलिया ने जरूर दूसरी टीमों की तुलना में इसमें जीतने में की कला सीखी है पर भारतीय टीम भी विश्व कप में शीर्ष पर पहुंचने में सक्षम है। उन्होंने कहा, 'मुझे इसमें कोई हारनी नहीं होगी अगर भारतीय टीम जल्दी ही इस कमी को पूरा करती है। उन्होंने कहा कि भारतीय टीम के विश्व कप जीतने की संभावना है क्योंकि उसके पास ऐसा करने की क्षमता रखने वाले खिलाड़ी हैं। साथ ही कहा कि कप जीतने के लिये बहुत कुछ सही होना जरूरी है क्योंकि नॉकआउट मैचों में जिनमें कुछ भी संभव है।

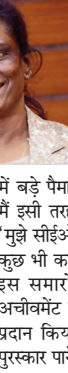
## रघुराम अय्यर आईओए के सीईओ बने रहेंगे : उषा

### नई दिल्ली ।

भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की प्रमुख पीटी उषा ने कहा है कि मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) के पद पर नियुक्त किये गये रघुराम अय्यर को वह नहीं हटाएंगी। दिग्गज एथलीट रही उषा के अनुसार उन्हें अय्यर की क्षमताओं पर पूरा भरोसा है। साथ ही कहा कि उनकी नियुक्ति के लिए उन्होंने किसी प्रकार का कोई दबाव नहीं डाला था। वहीं कहा जा रहा है कि अय्यर को नियुक्त करने से आईओए कार्यकारी परिषद के अधिकांश सदस्य खुश नहीं हैं और वे एक निलंबन आदेश पर हस्ताक्षर करने जा रहे हैं। इसमें सीईओ के रूप में अय्यर की नियुक्ति को अमान्य करार दिया जाएगा। इससे पहले आईओए ने अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के लगातार दबाव को देखते हुए गत माह छह जनवरी को इंडियन प्रीमियर लीग टीम राजस्थान रॉयल्स के पूर्व अधिकारी अय्यर को सीईओ नियुक्त किया था पर उनकी नियुक्ति के कुछ सप्ताहों के अंदर ही कार्यकारी परिषद में नाराजगी कायम हो गयी। कई सदस्यों ने कहा कि उषा ने सीईओ के रूप में अय्यर की नियुक्ति के लिए उन पर अनावश्यक दबाव बनाया था। वहीं उषा ने इन आरोपों को गलत बताया था। कार्यकारी परिषद के 15 में से लगभग 12 सदस्यों ने तब कहा था कि अय्यर की

नियुक्ति के लिए शीर्ष संस्था ने मंजूरी नहीं ली गयी थी। वहीं इस आरोप को खारिज करते हुए उषा ने कहा, 'जब आप सही काम कर रहे होते हैं तो फिर चिंता नहीं करनी चाहिए। एक समारोह में उषा से सीईओ प्रकृषण पर टिप्पणी करने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा, 'सीईओ काम कर रहे हैं। मैं नहीं हटाऊंगी।' उषा ने कहा कि उषा ने और वह काम कर रहे हैं। वहीं यह पूछे जाने पर कि क्या कार्यकारी परिषद के कई सदस्यों के कथित तौर पर उन्हें हटाने की इच्छा के बावजूद क्या वह अपना सामान्य कामकाज कर सकेंगे, उषा ने कहा, ' सी

फ्रीसदी वह अपने पद पर बने रहेंगे। वह काफी अच्छे सीईओ हैं।' उषा ने कहा, 'हम हमेशा चाहते थे कि आईओए पद पर एक प्रसिद्ध व्यक्ति अधिकारी हो जिससे खेलों के विकास में बड़े पैमाने पर सहायता मिल सकती है। मैं इसी तरह से सोच रही हूँ। उन्होंने कहा, 'मुझे सीईओ पर भरोसा है और वह जो कुछ भी कर रहे हैं, उस पर मुझे भरोसा है। इस समारोह में उषा को 'लाइफटाइम अचीवमेंट के लिए पदक और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। वह लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार पाने वाली पांचवीं खिलाड़ी हैं।



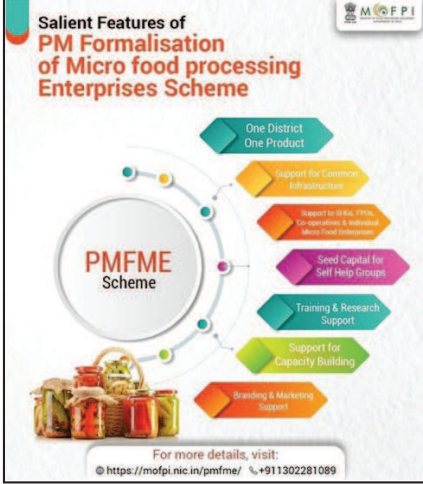
फ्रीसदी वह अपने पद पर बने रहेंगे। वह काफी अच्छे सीईओ हैं।' उषा ने कहा, 'हम हमेशा चाहते थे कि आईओए पद पर एक प्रसिद्ध व्यक्ति अधिकारी हो जिससे खेलों के विकास में बड़े पैमाने पर सहायता मिल सकती है। मैं इसी तरह से सोच रही हूँ। उन्होंने कहा, 'मुझे सीईओ पर भरोसा है और वह जो कुछ भी कर रहे हैं, उस पर मुझे भरोसा है। इस समारोह में उषा को 'लाइफटाइम अचीवमेंट के लिए पदक और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। वह लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार पाने वाली पांचवीं खिलाड़ी हैं।

## एफआईएच प्रो लीग में नीदरलैंड ने भारतीय महिला हॉकी टीम को हराया

**भुवनेश्वर ।** भारतीय महिला हॉकी टीम को एफआईएच हॉकी प्रो लीग में हार का सामना करना पड़ा है। भारतीय टीम को इस मुकाबले में नीदरलैंड ने 1-3 से हराया। इस मुकाबले में नीदरलैंड की ओर से यिब्वी जानसन ने तीसरे और 34 मिनट में गोल किये। वहीं फे वैन डेर एल्ट्ट ने 21 वें मिनट में एक गोल दागा। वहीं भारतीय टीम की ओर से एकमात्र गोल नवनीत कौर ने खेल की शुरुआत में ही 9 वें मिनट में दाग दिया। जानसन ने डच टीम को शुरुआत में ही बढ़त दिला दी। इसके बाद भारत की नवनीत ने एक गोल कर मुकाबला बराबरी ला दिया। दूसरा क्वार्टर शुरू होते ही नीदरलैंड ने टीम ने हमला बोला पर वह गोल में सफल नहीं हुई। तब पिपन डिंके का शॉर्ट पोस्ट से टकराकर दूर चला गया। पहले हाफ के समाप्त होने तक स्कोर 2-1 रहा। नीदरलैंड ने तीसरे क्वार्टर में भारत पर दबाव बनाया जिसका लाभ उसे मिला और पेनल्टी कॉर्नर के जरिये जानसन ने गोल कर अपनी टीम को 3-1 की बढ़त दिला दी। चौथे क्वार्टर में खेल लंबा खिंच गया और दोनों टीमों ने लगातार अवसर हासिल किये पर वे गोल नहीं कर पायीं।



# सूक्ष्म खाद्य उद्योगों की सहायता के लिए प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य संस्करण उन्नयन योजना



सूरत। स्वयं सहायता समूहों का प्रत्येक सदस्य राज्य में विभिन्न कृषि उपज-आधारित उत्पादों के लिए प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य संस्करण उन्नयन योजना के तहत 40,000 रुपये की सहायता प्राप्त करने के लिए पात्र है। केंद्र सरकार की एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) पीएमएफएमई योजना के तहत देशभर में असंगठित खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में लगभग 25 लाख खाद्य प्रसंस्करण उद्योग चल रहे हैं। असंगठित उद्योग रोजगार में 74 प्रतिशत का योगदान करते हैं, जिसमें संयंत्र और मशीनरी

में केवल 7 प्रतिशत निवेश और 3 प्रतिशत बकाया है। इनमें से एक तिहाई महिलाएं हैं। इसने उत्पादन में 12 प्रतिशत और मूल्यवर्धन में 27 प्रतिशत का योगदान दिया है। कुल इकाइयों में से 66 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में चल रही हैं और लगभग 80 प्रतिशत परिवार-आधारित इकाइयों हैं। इन उद्योगों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसका सीधा असर उस उद्योग के काम और विकास पर पड़ता है। फिर, इस क्षेत्र में कठिनाइयों को दूर करने के लिए, भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय ने प्रधान मंत्री माइक्रो फूड प्रोसेसिंग एंटरप्राइज फॉर्मलाइजेशन (पीएमएफएमई) योजना लागू की है जिसमें गुजरात सरकार ने 40 प्रतिशत से अधिक का योगदान दिया है। पीएमएफएमई योजना का मुख्य उद्देश्य प्रौद्योगिकी जानकारी, कौशल प्रशिक्षण और

वित्तीय सहायता के माध्यम से सूक्ष्म उद्योगों को क्षमता का निर्माण और प्रचार करना है। इसके अलावा, मुख्य उद्देश्य वर्तमान में कार्यरत उद्योगों को प्रौद्योगिकी उन्नयन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना और साथ ही कृषि उत्पादन संगठन (एफपीओ), स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) और सहकारी समितियों को पूर्ण मूल्य संवर्धन में सहायता प्रदान करना है। सूक्ष्म उद्योग और विभिन्न सरकारी पंजीकरणों के लिए संचालित उद्योगों का समर्थन करना ब्रांडिंग और मार्केटिंग को मजबूत करना है। पीएमएफएमई योजना का लाभ उठाने के लिए मानदंड आवश्यक हैं। जिसमें एक सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाई संचालित होनी चाहिए। इकाई असंगठित होनी चाहिए। साथ ही इसमें कम से कम 10 कर्मचारी होने चाहिए,

नई सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाई एक जिला-एक उत्पादन के अंतर्गत निश्चित उत्पादन वाली होनी चाहिए। आवेदक के पास उद्योग का मालिकाना हक होना चाहिए। स्वामित्व का अधिकार स्वामित्व या साझेदारी भी होना चाहिए। आवेदक की आयु 18 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। पीएमएफएमई योजना निजी सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए प्रति उद्योग पात्र परियोजनाओं को लागत का 35 प्रतिशत (10 लाख रुपये तक) को क्रेडिट लिंकड सब्सिडी प्रदान करती है। एफपीओ, उत्पादकों, सहकारी समितियों और स्वयं सहायता समूहों को क्रेडिट लिंक के साथ 35 प्रतिशत की दर से अनुदान सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना के तहत स्वयं सहायता समूहों के प्रत्येक सदस्य को कार्यशील पूंजी और छोटे उपकरणों की

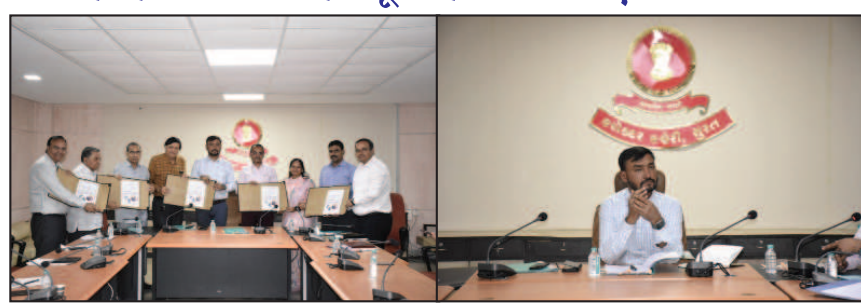
सहायता दी जाती है। पीएमएफएमई योजना के तहत फल, सब्जियां, अनाज, काली मिर्च, मसाले, दूध, तेलीबिया पर आधारित सभी खाद्य पदार्थ जैसे मिठाई, अचार, नमकीन, जैम, जेली, सांस, पकाने के लिए तैयार उत्पाद, खाने के लिए तैयार उत्पाद, बेकरी आइटम, विभिन्न प्रकार के भोजन। पाउडर, पनीर, मक्खन, तेल, मसालों सहित उत्पादों के लिए आवेदन किया जा सकता है। आवेदन के लिए आवश्यक दस्तावेज अपलोड करने के लिए डीएलसी द्वारा अनुशंसित राशि का भुगतान करके श्रृंखला का निर्माण। अधिक जानकारी के लिए गुजरात एग्री इंस्ट्रूज काॅर्पोरेशन लिमिटेड इस आवेदन को [www.pmfme.mofpi.gov.in](http://www.pmfme.mofpi.gov.in) पर संपर्क करके ऑनलाइन पंजीकृत किया जा सकता है।

## सूरत के 1.91 लाख छात्र 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा देंगे

सूरत। गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (जोएएसएचईसीबी)-गांधीनगर में एसएससी (कक्षा 10) और एचएससी (कक्षा 12) की परीक्षा 11 मार्च-2024 से शुरू हो रही है। सूरत शहर-जिले के कुल 1,91,330 छात्र परीक्षा देंगे। इसमें कक्षा 10 के 1,10,970 छात्र, कक्षा 12 सामान्य स्ट्रीम के 62,340 छात्र और विज्ञान स्ट्रीम के 18,020 छात्र शामिल हैं। माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के आयोजन के लिए तैयार जिला शिक्षा प्रणाली द्वारा प्रारंभिक तैयारियों के हिस्से के रूप में विभिन्न गतिविधियां शुरू की गई हैं। सूरत शहर-जिले में कुल 613 स्थानों पर परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। जिसमें 10वीं कक्षा के 347 केंद्र, 12वीं विज्ञान स्ट्रीम के 192 और विज्ञान स्ट्रीम के 74 केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे की सुविधा है। कक्षा 10 और 12 विज्ञान स्ट्रीम की परीक्षा 11 से 22 मार्च तक और सामान्य स्ट्रीम की परीक्षा 11 से 26 मार्च तक आयोजित की जाएगी। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा शुरू की गई 'परीक्षासाथी' परीक्षा पे चर्चा' हेल्पलाइन 26 मार्च तक छात्रों के लिए चालू रहेगी। माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के आयोजन के लिए तैयार जिला शिक्षा प्रणाली द्वारा प्रारंभिक तैयारियों के हिस्से के रूप में विभिन्न गतिविधियां शुरू की गई हैं। सूरत शहर-जिले में कुल 613 स्थानों पर परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। जिसमें 10वीं कक्षा के 347 केंद्र, 12वीं विज्ञान स्ट्रीम के 192 और विज्ञान स्ट्रीम के 74 केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे की सुविधा है। कक्षा 10 और 12 विज्ञान स्ट्रीम की परीक्षा 11 से 22 मार्च तक और सामान्य स्ट्रीम की परीक्षा 11 से 26 मार्च तक आयोजित की जाएगी।

## वास्तविक समय रिहर्सल के माध्यम से परीक्षा से पहले संभावित यातायात बाधाओं की पहचान करना और उन्हें पहले से ही हल करना महत्वपूर्ण है: रेजिडेंट एडिशनल कलेक्टर श्री विजय रवारी

सूरत। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय-सूरत द्वारा 'जिला परीक्षा समिति' की बैठक कलेक्टर कार्यालय सभागार में रेजिडेंट एडिशनल कलेक्टर विजय रवारी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। सूरत शहर-जिले में कक्षा 10 और 12 की बोर्ड परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित करने के उद्देश्य से विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ चर्चा की गई। परीक्षा केंद्रों, यातायात प्रबंधन, परीक्षा के दौरान बच्चों के लिए बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं, परीक्षा स्थल पर सीसीटीवी सुविधा और बच्चों की सुरक्षा सहित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। अपर कलेक्टर ने मेट्रो परिचालन के कारण उत्पन्न होने वाली यातायात समस्या का जिक्र किया और पुलिस विभाग को सुचारू व्यवस्था करने



को कहा ताकि बच्चे समय पर परीक्षा केंद्रों तक पहुंच सकें। साथ ही परीक्षा के दिन से पहले संभावित परीक्षा स्थल पर सीसीटीवी सुविधाएं और बच्चों की सुरक्षा सहित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। अपर कलेक्टर ने मेट्रो परिचालन के कारण उत्पन्न होने वाली यातायात समस्या का जिक्र किया और पुलिस विभाग को सुचारू व्यवस्था करने

के लिए आवश्यक निर्जलीकरण के दवाएं और सभी प्राथमिक चिकित्सा सुविधाएं तैयार रखने का निर्देश दिया गया है। साथ ही हर विभाग के अधिकारियों से परीक्षार्थी को होने वाली किसी भी समस्या का समय रहते समाधान करने का अनुरोध किया। जिला शिक्षा अधिकारी भागीरथ सिंह परमार ने परीक्षा आयोजन के

बाद में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि जिले के सभी परीक्षा केंद्र शत-प्रतिशत सीसीटीवी से लैस हैं। उन्होंने कहा कि बच्चे भयमुक्त वातावरण में बिना किसी बाधा के अपनी परीक्षा पूरी कर सकें, इसकी व्यवस्था की गयी है। 'परीक्षासाथी के साथ परीक्षा वेतन चर्चा' पुस्तिका का विमोचन बैठक में गणमान्य अतिथियों ने

## आर्सेलरमित्तल निष्पान स्टील इंडिया ने 2030 तक उत्सर्जन तीव्रता में 20% की कमी का लक्ष्य रखा



सूरत - हजीरा। दुनिया के दो प्रमुख इस्पात निर्माता आर्सेलरमित्तल और निष्पान स्टील के संयुक्त उद्यम आर्सेलरमित्तल निष्पान स्टील इंडिया (एएम/एनएस इंडिया) ने आज अपनी पहली क्लाइमेट एक्शन रिपोर्ट प्रकाशित की है। रिपोर्ट का उद्देश्य भारत में कार्बन रहित विकास में तेजी लाना है। इसके लिए तत्काल कार्रवाई की रूपरेखा इस रिपोर्ट में है। रिपोर्ट भारतीय इस्पात क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण को रेखांकित करती है क्योंकि देश 2026-27 तक 5

ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था और तीसरी सबसे बड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्था का लक्ष्य रखता है। आदित्य मित्तल, चेयरमैन, आर्सेलरमित्तल निष्पान स्टील इंडिया (एएम/एनएस इंडिया) ने कहा, "हमारी कंपनी और देश दोनों का विस्तार हो रहा है। हम विकास तथा उत्सर्जन को अलग करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। रिसर्च बताती है कि यदि पूरी तरह बदलाव न किया गया तो स्टील की बढ़ती मांग से 2050 तक उत्सर्जन में 200% की वृद्धि हो सकती है। आज, हम घोषणा करते हैं कि हम एक गेडमैप के साथ एएम/एनएस इंडिया की उत्सर्जन तीव्रता में अतिरिक्त 20% की कमी का लक्ष्य रख रहे हैं। लंबी अवधि

में शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए। एएम/एनएस इंडिया वर्तमान में भारत में एकीकृत इस्पात उत्पादकों में सबसे कम उत्सर्जन तीव्रता वाले देशों में से एक है, जिसने 2015 के बाद से अपनी उत्सर्जन तीव्रता को एक तिहाई कम कर दिया है। दिलिप ओम्पेन, सीईओ, आर्सेलरमित्तल निष्पान स्टील इंडिया (एएम/एनएस इंडिया) ने कहा, "एक स्पष्ट मार्ग के साथ, हमारी दोनों मूल कंपनियां, आर्सेलरमित्तल और निष्पान स्टील, 2050 तक नेट जीरो बनने के लिए प्रतिबद्ध हैं। एएम/एनएस इंडिया जैसे ही अगले विकास चरण में प्रवेश करता है, हम विभिन्न मोचों और समय सीमाओं में विशिष्ट प्रतिबद्धताओं और कार्यों के साथ अपनी निकट

अवधि डीकार्बोनाइजेशन रणनीति को स्पष्ट करने के लिए इस महत्वपूर्ण क्षण का लाभ उठाते हैं। हमारी रिपोर्ट दीर्घकालिक विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए एक रोडमैप की रूपरेखा भी पेश करती है जिसमें उद्योग, सरकार और नागरिक समाज के लिए प्रमुख चुनौतियों पर स्पष्टता हो तथा उसे सहयोगात्मक रूप से संबोधित किया जा सके। यह रणनीति कंपनी के विकास को बढ़ावा देते हुए एएम/एनएस इंडिया की तत्काल डीकार्बोनाइजेशन योजना को दर्शाती है जिसमें निम्नलिखित बिंदु समाविष्ट हैं: • क्षमता उपयोग में वृद्धि करके परिचालन दक्षता में वृद्धि, जहां भी संभव हो ऊर्जा पुनर्प्राप्ति, उत्पादन

## गर्ल्स अंडर-11 जूनियर बैडमिंटन में माही ने पहली रैंक हासिल की



सूरत। सूरत डिस्ट्रिक्ट जूनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। जिसमें रेजिडेंट इंटरनेशनल स्कूल (4-ई सीबीएसई) में पढ़ने वाली छात्रा माही मोंटू कोलसावाला ने गर्ल्स अंडर-11 सिंगल्स में पहली रैंक हासिल की है। इस अवसर पर स्कूल परिवार और प्रबंध निदेशक किशनकुमार मांगुकिा, कैपस निदेशक आशीष वाधानी और प्रिंसिपल त्रिषार परमार सर द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

## बॉम्बे हाई कोर्ट ने संगीत लाइसेंसिंग प्राधिकरण को बरकरार रखा: पीपीएल ने ऐतिहासिक कानूनी लड़ाई जीती

एक अभूतपूर्व फैसले में, बॉम्बे हाई कोर्ट ने संगीत लाइसेंसिंग दिग्गज फोनोग्राफिक परफॉर्मर्स लिमिटेड (पीपीएल) और नोवेक्स कम्युनिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड के अधिकार को स्पष्ट रूप से बरकरार रखा है। लिमिटेड (नोवेक्स) कॉपीराइट सोसायटी के रूप में पंजीकरण का आवश्यकता को दरकिनार करते हुए, कॉपीराइट मालिकों के रूप में लाइसेंस जारी करेगा। 24 जनवरी, 2024 को सुनाया गया ऐतिहासिक फैसला, ध्वनि रिकॉर्डिंग के लाइसेंस के मालिक के अधिकारों के दायरे पर लंबे समय से चल रही बहस का निपटारा करता है। "इस कानूनी लड़ाई में

पीपीएल की जीत सिर्फ हमारी जीत नहीं है, बल्कि पूरे संगीत उद्योग की जीत है। बॉम्बे हाई कोर्ट का फैसला कॉपीराइट मालिकों और विशेष लाइसेंसधारियों के अधिकारों को मजबूत करता है, जिससे पीपीएल को इसकी सुरक्षा के लिए उपकरण मिलते हैं। व्यापक उल्लंघन से जो वास्तविक संगीत लेबलों की कड़ी मेहनत से अर्जित निवेश को कमजोर करता है। यह जीत उन रचनात्मक प्रयासों का सम्मान करने और उनकी रक्षा करने के महत्व को रेखांकित करती है जो संगीत उद्योग को आगे बढ़ाते हैं, एक ऐसा भविष्य सुरक्षित करते हैं जहां कॉपीराइट, कलाकारों और निवेशकों को उचित रूप से महत्व

दिया जाता है और संरक्षित किया जाता है। क्रिएशंस, पीपीएल के एमडी और सीईओ जेबी अय्यर ने कहा। 1941 में स्थापित, पीपीएल ने 200 से अधिक प्रतिष्ठानों के खिलाफ कई मुकदमों में जीत हासिल की है, जिनमें द सोशल, फर्जी कैफे और ओलिव बार एंड किचन जैसे उल्लेखनीय नाम शामिल हैं। अदालत का आदेश कॉपीराइट गतिशीलता का एक उदाहरण है, जिसका संगीत उद्योग पर दूरगामी प्रभाव है। अदालत के प्रमुख निष्कर्षों में मालिक और विशिष्ट लाइसेंसधारी के रूप में पीपीएल की स्थिति को पुष्टि करना, अनुच्छेद 30 के तहत लाइसेंस देने की इसकी शक्ति को

पहचाना और असाइनमेंट डीड और विशिष्ट लाइसेंस समझौतों को मान्य करना शामिल है। निर्णय अनुच्छेद 33(1) की व्याख्या मालिक के अधिकारों पर प्रतिबंध के रूप में नहीं बल्कि उनकी सुरक्षा और सुविधा के साधन के रूप में करता है। यह कानूनी जीत पीपीएल को अपने लाइसेंसिंग कार्यों को निबंध रूप से जारी रखने, उल्लंघन को रोकने और अपने विशाल कैटलॉग के अनधिकृत उपयोग के खिलाफ उपाय खोजने का अधिकार देती है, जिसमें आदित्य म्यूजिक, लाहरी म्यूजिक, सोनी म्यूजिक और टी-सीरीज जैसे प्रसिद्ध लेबल के 7 मिलियन से अधिक गाने शामिल हैं।

## सैमसंग इंडिया ने चुनिंदा शहरों में 10 मिनट में गैलेक्सी S24 सीरीज की डिलीवरी करने के लिए ब्लिंकिट के साथ साझेदारी की

गुरुग्राम। भारत की सबसे बड़ी इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी सैमसंग ने भारत में अपनी हाल ही में लॉन्च की गई गैलेक्सी S24 सीरीज डिलीवरी के लिए ब्लिंकिट-कॉमर्स प्लेटफॉर्म ब्लिंकिट के साथ साझेदारी की है। दिल्ली-एनसीआर, बंगलुरु और मुंबई के ग्राहक ब्लिंकिट पर गैलेक्सी S24 अल्ट्रा, गैलेक्सी S24+ और गैलेक्सी S24 स्मार्टफोन ऑर्डर कर सकते हैं और उन्हें 10 मिनट से भी कम समय में उनके फोन की डिलीवरी मिल जाएगी। ब्लिंकिट पर गैलेक्सी S24 सीरीज खरीदने वाले ग्राहकों को एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड के माध्यम से खरीदारी करने पर 5000 रुपये इंस्टैंट कैशबैक मिलेगा।

ब्लिंकिट के साथ साझेदारी से सैमसंग को भारत में अपनी प्रमुख S24 सीरीज की भारी मांग को पूरा करने में मदद मिलेगी। सैमसंग को गैलेक्सी S24 सीरीज के लिए रिकॉर्ड प्री-बुकिंग मिली है, जिससे यह अब तक की सबसे सफल एस सीरीज बन गई है। 18 जनवरी से केवल तीन दिनों में भारत में 250,000 से अधिक ग्राहक गैलेक्सी S24 स्मार्टफोन की प्री-बुकिंग कर चुके हैं। 'मेड इन इंडिया' गैलेक्सी S24 अल्ट्रा, गैलेक्सी S24+ और गैलेक्सी S24 स्मार्टफोन लाइव ट्रॉन्गलेट, इंटरप्रेटर, चैट असिस्ट, नोट असिस्ट और ट्रॉन्गलेट से अधिक सुविधाओं से लैस है। सैमसंग कोर्पोरेट में निर्मित एआई हिंदी सहित 13 भाषाओं में रियल टाइम में मैसेज का अनुवाद भी कर सकता है। कार में, एंड्रॉइड ऑटो ऑटोमैटिक तरीके से इनकॉमिंग मैसेज की जानकारी देगा और जरूरी रिप्लाय और एक्शन के बारे में भी सुझाव देगा। गैलेक्सी S24 जेस्चर-संचालित 'सर्कल टू सर्च फीचर' के साथ आता है। मददगार, उच्च-गुणवत्ता वाले सर्च रिजल्ट देखने के लिए यूजर गैलेक्सी S24 को स्क्रीन पर कुछ भी गोला बनाते हुए उसे हाइलाइट कर सकते हैं, लिख सकते हैं या टेप कर सकते हैं। कुछ विशेष सर्च के लिए, जेनेरिक एआई-संचालित ओवरव्यू पूरे वेब से प्रासंगिक उपयोगी जानकारी और संदर्भ मुहैया कराता है। गैलेक्सी S24 सीरीज का जीवंत प्रीव्यू दिखाता है।